सद्ज्ञान ग्रन्थ माला का १६ वाँ पुष्प—

हस्त रेखा विज्ञान

—मंगलचन्द भण्डारी।

ॐ

सद्ज्ञान ग्रन्थमाला का छत्तीसवां पुष्प—

हस्त रेखा विज्ञान

लेखक—

श्री० मंगलचन्द जी भण्डारी हि० सा० विशारद,
अजमेर।

प्रकाशक—

"अखंड ज्योति" कार्यालय, मथुरा।

प्रथमबार } { मूल्य ।=)

मुद्रक—श्यामलाल भार्गव, श्याम प्रेस चौयामण्डी, मथुरा।

भूमिका

सामुद्रिक विद्या को कुछ समय से हमारे देश में तिरष्कृत दृष्टि से देखा जाने लगा है और ठगों की विद्या समझा जाने लगा है। पहले मेरे भी कुछ ऐसे ही ख्याल थे परन्तु जब मैं अपने अस्थिक्षय (Bone T. B.) का इलाज कराने अखण्ड-ज्योति के विद्वान् सम्पादक आचार्य श्रीराम शर्मा जी के पास गया तो मुझे उनके द्वारा इस विद्या के सम्बन्ध में बहुत आश्चर्य-जनक बातें मालूम हुईं। उन्होंने मेरे हाथ को ध्यान पूर्वक देखा और मेरी ऐसी ऐसी गुप्त बातें प्रकट कीं जो मेरे सिवाय और कोई नहीं जानता। मेरे शरीर को और मन को उन्होंने हाथ देख कर इस प्रकार कह दिया मानों कोई पुस्तक पढ़ रहे हों। उन्होंने जितनी भी बातें बताईं प्रायः वे सभी ही अक्षरसः सत्य थीं।

तब मेरी रुचि इस ओर बढ़ी और इच्छा हुई कि इस विद्या के सम्बन्ध में कुछ ज्ञान प्राप्त करूं। आचार्य जी ने मेरी इच्छा को प्रोत्साहन दिया, बहुत से अमूल्य ग्रन्थ इस विषय के पढ़ने को दिये और अपने निजी अनुभव के आधार पर बहुत सी महत्वपूर्ण बातें बताईं। तब से अब तक मैं अपने अनुभव और ज्ञान को विभिन्न सूत्रों द्वारा बढ़ाता रहा हूँ। जो कुछ मैं अब तक जान सका हूँ उसका संक्षिप्त अंश इस पुस्तक के रूप में जनता के सामने उपस्थित कर रहा हूं। मेरा विश्वास है कि सामुद्रिक विद्या के प्रेमियों को यह पुस्तक उपयोगी और रुचिकर प्रतीत होगी।

—मंगलचन्द भण्डारी.

हस्तरेखा-विज्ञान

पशु विद्या के जानकार लोग घोड़ा, गाय, भैंस, बैल, ऊंट, आदि के अंगों की बनावट पर बारीकी से नजर डालते हैं और यह बता देते हैं कि यह पशु इस नस्ल का है ! इसके गुण, कर्म स्वभाव इस प्रकार के होंगे। उस पशु को काम में लाकर परीक्षा करने के लिये बहुत समय चाहिये, इतना समय खरीद फरोख्त में नहीं मिलता, यह कठिनाई बहुत बड़ी चढ़ी मालूम पड़ती अगर "शारीरिक चिन्हों को देख कर स्वभाव जानने की विद्या" का आविष्कार न हुआ होता। परन्तु अब वैसी कठिनाई नहीं है, एक मामूली किसान, मोटे तौर से देख भाल करके झट बता देता है कि यह बैल कैसा निकलेगा, गाय भैंस के दूध घी के बारे में भी यह आसानी से अन्दाज लगा लेता है। इसी प्रकार ऊंट, घोड़ा, हाथी आदि की खरीद फरोख्त करने वाले लोग भी एक दृष्टि डाल कर पशु के भीतर का हाल जान लेते हैं। उनका अन्दाज कुछ अपवादों को छोड़ कर आमतौर से ठीक ही निकलता है।

आकृति देख कर पशुओं का स्वाभाव जानने की विद्या इतनी सच साबित हुई है कि अब उसमें सन्देह और मतभेद की अधिक गुञ्जायश नहीं रही। अनुभव ने इसकी प्रामाणिकता साबित कर दी है। यह सब देखते हुए भी जो लोग आकृति देख कर मनुष्य की पहचान के बारे में शक करते हैं, उसे मिथ्या कहते हैं उनकी बुद्धि को क्या कहा जाय ? वास्तविकता यह है

कि जिस प्रकार पशु के बाह्य चिह्न देख कर उसके भीतर गुण जाने जा सकते हैं उसी प्रकार मनुष्य को भी पहचाना जा सकता है। गुणों से आकृति की रचना होती है। जिसका जैसा स्वभाव है उसकी शारीरिक आकृति भी वैसी ही बनने लगेगी। हम देखते हैं कि जब कोई आदमी झल्लाया हुआ हो झुंझला रहा हो तो उसके चहरे की सकुड़नें, झुर्रियां एक खास क़िस्म से तनी होती हैं। मस्तक पर झुर्रियां पड़ जाती हैं, भौहों में ऐंठ पड़ जाती हैं, कनपटी के पास का चमड़ा सकुड़ जाता है, आंखें चिपटी सी रहती हैं, गालों की मांस पेशियां तनती हैं। इसी प्रकार शोक, चिन्ता, दुःख, पश्चाताप, विरह, वेदना, दर्द, हानि, खुशी, लाभ, सन्तोष, अभिमान आदि की अवस्था में भी अलग अलग प्रकार की आकृतियां—भाव भङ्गियां बनती हैं। जैसे जैसे अन्तरङ्ग अवस्था बदलती है वैसे ही वैसे चेहरे की भाव भङ्गी भी बदल जाती है।

जब मन में कोई भाव स्थायी रूप से आता है तो आकृति भी उसके अनुसार बदल जाती है, किन्तु यदि कोई मनोभाव स्थायी रूप से अपने ऊपर अधिकार जमा ले तो उसकी छाया अङ्ग प्रत्यङ्गों पर स्थायी रूप से प्रकट होने लगती है। क्रोधी आदमी की आंखों में लाल रङ्ग के डोरे पड़ने लगते हैं। स्वार्थी आदमी की आंखों में तिरछा पन आ जाता है। माथे पर अधिक सलवटें देख कर यह अनुमान लगाया जाता है कि इस आदमी को भावनाओं का आवेश अधिक आता है। "अखण्ड-ज्योति कार्यालय" की "स्वस्थ और सुन्दर बनने की विद्या" पुस्तक में अनेक तर्क और प्रमाणों के साथ यह साबित किया गया है कि काम, क्रोध, लोभ, शोक, चिन्ता आदि के कारण सैकड़ों प्रकार की बीमारियां पैदा होती हैं, कुरूपता आती है

और कमजोरी तथा अकाल मृत्यु का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार सद्भावों से, सत्गुणों से स्वास्थ्य तथा सौन्दर्य की प्राप्ति होती है। इन सब प्रमाणों से स्पष्ट है कि मनुष्य का जैसा स्वभाव तथा विचार होते हैं वैसी ही उसकी आकृति, शारीरिक दशा, बनने लगती है। शरीर को देख कर मनुष्य के मनोभावों को जानने की विद्या सिखाने वाली पुस्तक "आकृति देख कर मनुष्य की पहचान" अखण्ड ज्योति कार्यालय से प्रकाशित हो चुकी है। आकृति और मनोभावों का आपस में बहुत घना सम्बन्ध है, इतना घना—कि एक को देख कर दूसरे को पहचानने में कुछ विशेष अड़चन न होनी चाहिये।

शरीर शास्त्र के अनुभवी विद्वानों का कथन है कि मस्तिष्क से निकल कर ज्ञान तन्तु शरीर के विभिन्न अंगों में फैल गये हैं। यों तो यह ज्ञान तन्तु शरीर के हर एक हिस्से में मौजूद हैं परन्तु सब से अधिक मात्रा में यह तन्तु हाथों की ओर गये हैं। मस्तिष्क में जो विचार धारा काम कर रही है, चित्त में जैसे विश्वास जम गये हैं हृदय में जैसी धारणा है, उसका प्रकटी करण हाथ को देख कर आसानी से हो सकता है। आकृति विज्ञान (Physionomy) के विशेषज्ञ और शरीर विज्ञान के आचार्य एक स्वर से इस बात का समर्थन करते हैं कि शरीर की भीतरी दशा का हाथों को देख कर परिचय प्राप्त किया जा सकता है। वैद्य लोग हाथ की जड़ में चलने वाली नाड़ी को देख कर रोगों का निदान करते हैं। कारण यही है कि ज्ञान तन्तुओं का हाथ में अत्यधि बाहुल्य होने के कारण शरीर के अन्य अंगों की अपेक्षा हाथ की नाड़ियां अधिक स्पष्ट होती हैं। चिकित्सक लोग नाखूनों की परीक्षा से भी रोगों का

निर्णय करते हैं, इसका कारण भी हाथों में अधिक मात्रा में रहने वाले ज्ञान तन्तु ही हैं।

जिनने डाक्टरी विद्या पढ़ी है वे जानते हैं कि लकवा रोग होने से कुछ समय पूर्व हथेली की रेखाओं में बड़ा भारी परिवर्तन होने लगता है। अक्सर बहुत सी छोटी मोटी रेखाएँ बिलकुल गायब हो जाती हैं। इससे प्रतीत होता है कि हाथ के द्वारा न केवल वर्तमान काल की आन्तरिक स्थिति जानी जाती है वरन् यह भी जाना जाता है कि भविष्य में कैसी कैसी घटनाएँ घटित होने वाली हैं। वर्तमान से भविष्य का बहुत बड़ा सम्बन्ध है। अमुक व्यक्ति आज यह कह रहा है यह जान लेने के पश्चात यह अनुमान लगाना सहज है कि इसका भविष्य कैसा होगा? मोटी बुद्धि वालों को भविष्य की जानकारी प्राप्त करना कोई चमत्कार जैसी वस्तु दिखाई पड़ती है परन्तु वास्तव में वह इतनी आश्चर्य जनक नहीं है जितनी कि समझी जाती है। जब बुखार आने को होता है तो कुछ समय पहले देह टूटने लगती है। बच्चा पैदा होने से भी नौ मास पहले स्त्री का पेट बढ़ने लगता है। आंखें जब दुखने आती हैं तो कुछ समय पहले पूर्व लक्षण प्रकट होने लगते हैं, दांत गिरने से पहले उनका हिलना शुरू हो जाता है, इसी प्रकार पूर्व लक्षणों के द्वारा मनुष्य का भविष्य भी जाना जा सकता है। जैसी आन्तरिक दशा होती है बाह्य परिस्थितियां उसके अनुसार ही प्राप्त होकर रहती हैं।

हाथ की रेखाओं पर आप विशेष रूप से ध्यान दें तो आपको मालूम पड़ेगा कि वे घटती बढ़ती रहती हैं। बहुत सी नई रेखाएँ पैदा होती हैं और बहुत सी गायब हो जाती हैं। कई की लम्बाई कम होती है कई की बढ़ जाती है, किसी में

शाखा प्रशाखाएं फूटती हैं, कुछ एक तरफ से दूसरी तरफ को झुकती हैं कुछ मोटी से पतली और पतली से मोटी होती है। इस प्रकार के परिवर्तन निरर्थक नहीं होते वरन् उनमें कुछ खास रहस्य छिपा होता है। मनुष्य की आन्तरिक दशा के हेर फेरों का प्रभाव हस्तरेखाओं पर पड़ता है तदनुसार उन रेखाओं में लौट फेर शुरू हो जाता है। इस परिवर्तन को देखकर अनुभवी व्यक्ति आसानी से पता लगा सकते हैं कि अमुक व्यक्ति की सूक्ष्म परिस्थितियां किस दिशा में चल रही हैं और उनके कारण निकट भविष्य में किस प्रकार की बाह्य परिस्थितियां बनना सम्भव है। यह अनुमान कभी कभी कुछ गलत भी हो सकते हैं जिसके कारण अक्सर दो देखे जाते हैं (१) परीक्षक का सूक्ष्म बुद्धि तथा अनुभवी न होना (२) स्वभाव का इतना नया परिवर्तन जिसका अंकन रेखाओं पर ठीक प्रकार न हो पाया हो। स्वभाव में अचानक जबरदस्त परिवर्तन हो जाने पर भविष्य की रचना भी तुरन्त ही बदल जाती है परन्तु हाथ की रेखायें इतनी जल्दी नहीं बदलतीं उनके बदलने में कुछ देर लगती है। इस नये परिवर्तन की पूरी जानकारी प्रकट न हो तो हस्तरेखाएं देख कर जो फल बताया गया है वह गलत साबित हो सकता है। ऐसे अपवाद कम होते हैं, कभी कभी होते हैं, तो भी होते अवश्य हैं। इसलिये सामुद्रिक विद्या में प्रवेश करने वाले को, परीक्षार्थी तथा परीक्षक को, यह कठिनाई भली प्रकार ध्यान में रखनी चाहिये और आरम्भ में यदि कुछ असफलता मिले तो उससे निराश न होकर अधिक सूक्ष्म बुद्धि का प्रयोग करके वास्तविकता तक पहुँचने का प्रयत्न करना चाहिये।

"हाथ की रेखाएँ मुट्ठी बांधने का फल है, या "काम करने से हथेली में सकुड़न पड़ जाती है" ऐसा कह कर सामुद्रिक

विद्या के महत्त्व को अस्वीकार करने वालों का मत अधिक बुद्धि संगत नहीं जान पड़ता। क्योंकि यदि ऐसा ही होता तो धनी लोग जो हाथ से कुछ काम नहीं करते उनके हाथ में रेखाऐं न होतीं या कम होती, इसके विपरीत किसान और मजदूर जो सदा कठिन परिश्रम में लगे रहते हैं उनके हाथ में बहुत अधिक रेखाएँ हुआ करतीं। परन्तु ऐसा देखा नही जाता। आप देखेंगे कि जिन लोगों का जीवन एक निश्चित धारा पर बहता चला जा रहा है और जिनसे कोई सद्गुण या दुर्गुण नहीं है उनके हाथ में कम रेखाएँ होती हैं क्यों कि उनके जीवन में विशेष हलचलें पैदा होने की सम्भावनाएँ नहीं होतीं। जो लोग अस्थिर चित्त के होते हैं, चढ़ाव उतार के कारोबार करते है, हलचलों में भाग लेते हैं उनके जीवन में सुख दुखों का लोट फेरों का बड़ा जोखम रहता है तदनुसार उनके हाथ में रेखाए' भी अधिक होती हैं। यदि यह बात न होती और गर्भ में बालक के मुट्ठी बांधे रहने के कारण ही हाथ में सलवटें पड़ा करती तो उनकी संख्या सभी बालकों में करीब करीब समान होनी चाहिये थी, परन्तु देखने से विदित होता है कि नवजात शिशुओं की रेखाओं की संख्या में भी भारी भिन्नता पाई जाती है।

परीक्षणों के आधार पर हमें इसी नतीजे पर पहुँचने के लिये विवश होना पड़ता है कि हाथ की रेखाएँ अपने अन्दर कुछ रहस्य छिपाये हुए हैं वह रहस्य यह है कि "मनुष्य की भीतरी परिस्थितियों का और भविष्य में घटित होने वाली घटनाओं का हस्त रेखाएँ एक प्रकार की सचित्र लिखावट है। जिसे पढ़ कर अपने बारे में और दूसरों के बारे में बहुत सी अज्ञात बातों को जाना जा सकता है।"

सामुद्रिक विद्या का इतिहास बहुत पुराना है। भारतवासी इसे पुरातनकाल से इससे लाभ उठाते आ रहे हैं यहां से इस विद्या का अन्य देशों में प्रसार हुआ। और चीन, तिब्बत, फारिस, मिश्र, यूनान आदि देशों में भी यह विद्या फैली। ईसा मसीह से तीन हजार वर्ष पहले चीन में हस्त रेखा जानने वाले विद्वान् मौजूद थे ऐसा पता चलता है। यूनान देश में पीलीमंन, अलातूनिया, प्लिनो, हिस पानस आदि कितने ही विद्वान् इस विद्या के धुरन्धर ज्ञाता हो चुके हैं। इतिहास में ऐसा उल्लेख मिलता है कि सम्राट् सिकन्दर को हिसपानिस नामक विद्वान् ने हस्त रेखा सम्बन्धो एक पुस्तक स्वर्णाक्षरों में लिख कर भेंट की थी। जब छापेखानों का आविष्कार हुआ ही था कि बाइबिल के बाद सामुद्रिक सम्बन्धी एक Dic Kunst Ciroman नामक पुस्तक जर्मनी देश में सन् १८७५ में छपी। इसके बाद वहां सन् १४९० ई० में एक दूसरी पुस्तक Cyromantia Aristelis Cum figuris छपी। यह दोनों पुस्तकें आज भी ब्रिटिश म्युजियम में सुरक्षित हैं। इंगलेण्ड में चौथे जार्ज के शासन काल में यह विद्या इतनी अधिक बढ़ी कि धूर्त लोग इसके द्वारा अनुचित लाभ उठाने लगे। ऐसे लोगों के विरुद्ध वहां की पार्लियामेण्ट ने एक "एन्टी पामिस्ट्री बिल" पास किया।

योरोपीय देशों ने हस्तरेखा विद्या के सम्बन्ध में महत्व-खोजें कीं और विज्ञान द्वारा यह साबित किया कि यह विद्या शरीर विज्ञान और मनोविज्ञान के आधार पर अवलम्बित है। वैज्ञानिक मेन्सोनर ने अपने परीक्षणों द्वारा यह साबित कर दिखाया कि हाथों में एक विशेष प्रकार के लाल रंग के परमाणु होते हैं जो रेखाओं के सहारे सहारे बढ़ते और पीछे

हटते हैं। यह घटना-बढ़ना इन ज्ञान तन्तुओं के विक्षोभ के कारण होता है जो मस्तिष्क से सीधे यहां तक आते हैं। मन में जैसी जैसी हलचलें होती हैं उनके अनुसार ज्ञान तन्तुओं में विक्षोभ और कम्पन उत्पन्न होते हैं तदनुसार हाथ के लाल रंग के परिमाणु रेखाओं के सहारे आगे पीछे चलते हैं। इस चलबल के कारण रेखाएं सकुड़ती और फैलती हैं, बनती और बिगड़ती हैं। वैज्ञानिक मेन्सीनर के प्रयोगों के द्वारा यह सिद्ध हो गया कि हस्तरेखाएँ मनुष्य की भीतरी अवस्था की तस्वीरें हैं। इन शोधों के आधार पर योरोपीय जनता के मन में सामुद्रिक विद्या के प्रति जो अविश्वास उत्पन्न हुआ था वह दूर हो गया। आज कल तो योरोप और अमेरिका में इस विषय की अच्छी अच्छी पुस्तकें प्रस्तुत हैं और इस विद्या के बहुत से विशेषज्ञ हो चुके हैं। डाक्टर ओसलर Osler ने इस विषय के अच्छे ग्रन्थ लिखे है। डाक्टर शेरो की Palmistry दुनिया भर में ख्याति प्राप्त कर चुकी है। समयानुसार यह प्रगति और आगे बढ़ती जायगी और एक दिन इस विद्या का वास्तविक महत्व सब किसी पर प्रकट हो जायगा, जो लोग इसे आज अश्रद्धा और अविश्वास मिश्रित दृष्टि से देखते हैं उन्हें तब इस पर कोई सन्देह करने का अवसर न रहेगा।

सामुद्रिक विद्या के प्रेमियों को एक बात विशेष रूप से ध्यान रखने की है हाथ की विभिन्न रेखाओं पर तथा हाथ की बनावट पर विस्तृत विचार करने के उपरान्त ही किसी निर्णय पर पहुँचना चाहिये। केवल एक रेखा अमुक चिन्ह को देख कर ही कोई निश्चित सम्मति प्रकट न कर देनी चाहिये। चतुर वैद्य कई प्रकार की परीक्षाओं द्वारा रोग की जानकारी प्राप्त करते हैं इसी प्रकार विभिन्न पहलुओं पर विचार करके ही हाथ का फल निर्धारित करना चाहिये।

हाथ

प्रायः दो प्रकार के हाथ देखे जाते हैं। किसी का हाथ मुलायम होता है दबाने से रुई की तरह नरम मालूम पड़ता है। किसी का हाथ कड़ा होता है दबाने से कड़ी हड्डियों और कठोर मांस पेशियों का अनुभव होता है। कोमल हाथ वाले धनी, भावुक, आराम पसन्द, मधुर भाषी मन में छिपाव रखने वाले, चंचल मन वाले पाये जाते हैं, थोड़ी सी खुशी में वे फूल जाते हैं और थोड़ी सी चिन्ता, बीमारी, आपत्ति आशंका उनको भयभीत एवं व्याकुल बना देती है।

जिनका हाथ कठोर बड़ा और मजबूत होता है वे विचारशील, गम्भीर, दूरदर्शी, परिश्रमी धुन के पक्के होते हैं। उनका स्वभाव रूखा और कर्कश होता है। उनके मित्र थोड़े होते हैं पर जो होते हैं सच्चे और स्थाई होते हैं। कठिनाइयों से भयभीत होने की अपेक्षा साहस पूर्वक मुकाबिला करना उन्हें ज्यादा पसन्द होता है। ऐसे व्यक्ति या तो परमार्थी होते हैं या फिर घोर स्वार्थी पाये जाते हैं। साहस पूर्ण और खतरनाक काम करने में कठोर हाथ वालों की रुचि अधिक होती है।

हाथ की बनावट—हाथ की बनावट ७ प्रकार की मानी गई है—(१) समकोण—Square. (२) चमसाकार—Spatulate. (३) दार्शनिक—Philosophic. (४) कलाकार या व्यावसायिक—Artistic. (५) निकृष्ट—Elementary. (६) आदर्शवादी या विषम—Idealistic. (७) मिश्रित—Mixed. बनावट को देख कर यह आसानी से जाना जा सकता है कि कौन हाथ किस श्रेणी का है। अब इनका पृथक् पृथक् विवेचन किया जाता है।

समकोण हाथ—चौकोर हथेली वाले हाथ समकोण कहे जाते हैं। जिसकी हथेली की लम्बाई चौड़ाई बराबर हो तथा चारों उँगलियों को मिला कर चौड़ाई एवं बीच की उँगली की लम्बाई बराबर हो यह समकोण हाथ कहा जाता है। ऐसे हाथ सीधे सपाट, कोमल, मुलायम और भरे हुए होते हैं। समकोण हाथ सबसे अच्छा समझा जाता है।

ऐसे व्यक्ति मिलनसार, उत्साही, नम्र स्वभाव तथा स्वाभिमानी होते हैं। असभ्य व्यवहार उन्हें सहन नहीं होता। वे नेता होते हैं पर आज्ञा पालन का गुण उनमें विशेष रूप से होता है। यदि उँगलियां गठीली हों तो सत्यवादी, शान्त स्वभाव, विचारशील, गम्भीर और दृढ़ निश्चयी होता है। श्रद्धालु होते हुए भी अन्ध विश्वास से वह दूर रहता है। किन्तु यदि उँगलियां नरम और सुडौल हों तो सजावट, फैशन, परस्ती, सौन्दर्य, प्रियता का भाव अधिक रहेगा। गन्दगी उन्हें जरा भी बर्दाश्त नहीं होती। समकोण हाथ वाले अक्सर सुयोग्य डाक्टर व्यापारी, वकील, अन्वेषक तथा बुद्धिजीवी होते हैं। वे सच्चरित्रों होते हैं पर विचारों में स्थिरता का बड़ा अभाव रहता है।

चमसाकार हाथ—जिस हाथ की उंगलियां कुछ मुड़ी हुई सी टेढ़ी सी रहती हैं। कलाई के पास हथेली की चौड़ाई अधिक होती है और उँगलियों के पास चौड़ाई कम होता है अथवा हथेली के पास चौड़ाई कम होती है और उँगलियों के पास अधिक होती है ऐसे हाथ को चमसाकार हाथ कहते हैं।

जिसकी हथेली कलाई के पास अधिक चौड़ी होती है उनके कार्य बहुत ऊँचे आदर्शों से भरे हुए होते हैं फिर भी वे आम लोगों को फायदा नहीं पहुँचा पाते। उन्हें अपने कार्यों में

बहुत अधिक सफलता नहीं मिलती। इसके विपरीत वे लोग जिनकी हथेली उँगलियों के पास अधिक चौड़ी होती है बहुत बड़े आदर्शवादी नहीं होते। समय की प्रगति को देखते हुए वे काम करते हैं। काय कुशलता की अधिकता के कारण वे ख्याति प्राप्त करते हैं और अपने कार्यों में बहुत करके सफल रहते हैं।

चमसाकार हाथ की कठोर उँगलियां उद्योगी और परिश्रमी होने का प्रमाण है। इनका शरीर और मन सदा किसी न किसी कार्य से लगा रहता है, ऐसे हाथ आविष्कारक, इन्जिनियर, मल्लाह, व्यापारी तथा समाज सुधारकों के देखे जाते हैं। गांठदार उँगलियों का होना मन में छिपाव रखने और गम्भीर होने का चिन्ह है। सरल और चिकनी उँगलियां दस्तकारी और कला-कौशल पसन्द लोगों की होती है।

ऐसे हाथ में अँगूठा छोटा हो तो झगड़ालू होना प्रकट करता है, बड़े अँगुठे वाले शासक, विलासात्मक काम करने वाले और शूरवीर होते हैं।

दार्शनिक हाथ—यह हाथ गठीला, लम्बा और बीच में झुका हुआ होता है। उँगलियों का हड्डियां तथा जोड़ उभरे हुए और नाखून लम्बे होते हैं।

इस प्रकार का हाथ मनुष्य की दार्शनिकता का द्योतक है। उनकी कल्पना इच्छा और विचारधारा, सामान्य मनुष्यों की अपेक्षा बहुत ऊँची होती है। सुख भोगने की अपेक्षा तत्व ज्ञान को प्राप्त करना उन्हें अधिक पसन्द होता है मित्रता पूर्ण ढंग से लोगों से मिलते है तो भी किसी से उनकी घनिष्ट मित्रता नहीं होती। ऐसे मनुष्यों के पास जो थोड़ा बहुत पैसा

होता है उसका खर्च परोपकारी कार्यों में हुआ करता है, श्रद्धा की अपेक्षा तर्क पर उनका आधार अधिक रहता है।

ऐसे हाथ में गठीली उँगलियां हों तो वह व्यक्ति कोई महत्व पूर्ण कृति अपने पीछे छोड़ जाता है। चिकनी उँगलियों वाले लोग इतने रहस्य मय होते हैं कि उनके पेट की थाह पाना अत्यन्त कठिन होता है। दार्शनिक हाथ वाले जीवन भर एक प्रकार से स्वार्थी हो बने रहते हैं, उनके कार्य और वचनों में सद्भावना तथा प्रामाणिकता की मात्रा अधिक पाई जाती है।

व्यवसायिक हाथ—साधारण लम्बाई चौड़ाई का हाथ जिसकी उँगलियां जड़ में मोटी और छोरों पर पतली होती हैं-व्यवसायिक या कलाकार हाथ कहा जाता है।

इस प्रकार के हाथ वाले लोग उतावले, चंचल स्वभाव, बातून, शेखीखोर, भावुक और बहकावे में जल्दी आ जाने वाले होते हैं। जरासी घटना से बहुत अधिक प्रभावित हो जाते हैं। थोड़े से झगड़े के कारण किसी से लड़ मरना या थोड़ी सी मित्रता से बहुत अधिक त्याग करने को उद्यत हो जाना इनकी विशेषता होती है। कलाकार का अर्थ यह नहीं है कि ऐसे लोग चित्रकार, गवैये या मूर्तिकार आदि होते हैं, इनकी इच्छा तो ऐसे कार्यों की ओर अधिक होती है परन्तु अपनी मानसिक निर्बलता के कारण उतनी सफलता प्राप्त नहीं कर पाते अतएव दूसरों के कलापूर्ण कार्य, अभिनय चित्र आदि देख कर इन्हें सन्तोष करना पड़ता है। काम शुरू करना और अधूरा छोड़ना यह दुर्गुण बुरी तरह इनके पल्ले बँधा होता है। बिना सोचे विचारे झट किसी काम के लिये तैयार हो जाने का फल यही हो सकता है कि उसे कठिनाई पड़ने पर अपने कार्य अधूरे छोड़ने पड़ें।

इस प्रकार के हाथ वाले की उंगलियां अगर सख्त हों तो कलामय कर्मों में उसे सफलता मिलती है, व्यापार में धन कमाता है और चुने हुए आदमियों में गिना जाता है। किन्तु यह उँगलियां पतली और उठी हुई सी हों तो ईर्षा, द्वेष, धूर्तता व झूंठ, छल, कपट आदि विकारों का होना प्रकट होता है। यदि यह हाथ बहुत अधिक नरम हो तो लापरवाही का प्रतीक है। कर्ज लेकर न देना, विषय वासना की ओर आकर्षित रहना, मनोरंजन में अधिक रुचि रखना आदि हलके दर्जे की बातें भी उनके स्वभाव में शामिल देखी जाती है।

निकृष्ट हाथ—जरूरत से ज्यादा छोटा-मोटा, भरा भारी और बेडौल बनावट का यह हाथ होता है। अँगूठे की लम्बाई तो इस छोटेपन के अनुपात से भी कम होती है। हाथ खुरदरा होता है और रेखाएँ बहुत थोड़ी पाई जाती है। इस प्रकार के हाथ वाले मन्द बुद्धि होते हैं, दिमाग कोई ऊँची बात नहीं सोच सकता और न उन में ऐसे गुण होते हैं जिनके द्वारा मित्रों की संख्या बढ़ा सकें या कोई व्यापारिक सफलता प्राप्त कर सकें। इसलिये ऐसे आदमी मेहनत मजूरी से अपना गुजारा करते हैं। उच्छृङ्खलता, असभ्यता और बेहूदगी उनमें अधिक रहती हैं। अपना स्वार्थ साधन करने के लिये बुरे से बुरे काम करने को वे तैयार हो जाते हैं। निकृष्ट हाथ वाला कोई व्यक्ति आज तक महापुरुष बन कर नहीं निकला। वे तो आहार, निद्रा, कलह और मैथुन में मस्त रहते हैं और पाशविक इच्छा, आकांक्षाओं के साथ इस दुनिया से कूच कर जाते हैं।

विषम हाथ—सुन्दर, लम्बा, तङ्ग, मुलायम, चिकना, कोमल यह विषम हाथ के लक्षण हैं। उँगलियां अधिक पतली

और नोकदार जड़ में कुछ हलकी और ऊपर कुछ भारी होती है।
इस हाथ को आदर्शवादी हाथ भी कहते हैं।

ऐसे आदमी बड़े बड़े मनसूबे बांधते हैं, बड़ी बड़ी ऊं
आशा और कल्पनाएं करते हैं, विचारों की दुनिया में चढ़
गिरते और डूबते उतराते रहते हैं। व्यवहारिक ज्ञान दुनिय
दारी की जानकारी और क्रिय कुशलता न होने के कारण उन
इच्छाएं, शेखचिल्ली की सी स्वाम खयालों बनी रहती है
ऐसे आदमी देवी देवताओं को वश में करने, सन्त महन्तों
कृपा पात्र करने, जन्त्र मन्त्रों द्वारा सिद्धियां प्राप्त करके चुटकिय
में बड़े बड़े काम कर लेने के मनसूबे बांधा करते हैं। ज्योतिष,
जन्मपत्री, देवकृपा, स्वर्ग आदि के कल्पना जगत् में विचरण
करते हुए उन्हें बड़ा मजा आता है। तर्क का अभाव और
अन्ध विश्वास की अधिकता रहती है। थोड़ी सी आशङ्का, चिन्त
या शोकजनक स्थिति आने पर वे बहुत अधिक व्याकुल और
भयभीत होते देखे जाते हैं।

योजनाएं आकाश में और योग्यता पाताल में होने के
कारण यह विषम हाथ कहा जाता है। ऐसी उड़ानें उड़ना
जिनको पूरा न किया जा सके कोरा आदर्शवाद है, इसीलिये इस
प्रकार का हाथ आदर्शवादी हाथ भी कहलाता है।

मिश्रित हाथ—पीछे जिन छै प्रकार के हाथों का वर्णन
किया गया है, उनमें से किसी का भी पूर्ण रूप से लक्षण न
मिलता है वरन् थोड़े थोड़े लक्षण कई हाथों के पाये जांय तो
उसे मिश्रित हाथ समझना चाहिये। जिस जिस प्रकारके जितने
जितने लक्षण मिलते हों उन उन हाथों के उतने उतने फलों को
मिला कर ही एक निश्चित परिणाम पर पहुंचना चाहिये।
मिश्रित हाथों की संख्या अधिक देखी जाती है, विशुद्ध रूप से

एक प्रकार के हाथ कम मात्रा में देखे जाते हैं। मिश्रण का ठीक ठीक अनुसन्धान करके उन सब का यथोचित भाग लेते हुए कोई फल कहना सूक्ष्म दर्शी आत्मविद् लोगों का काम है। सामुद्रिक विद्या को ठीक ठीक रूप से समझने के लिये ऐसी ही सूक्ष्म बुद्धि की आवश्यकता है।

हथेली

नियमित रूप से परिश्रम के साथ काम करने वालों की हथेलियां बड़ी होती हैं। उद्योगी, कर्तव्य परायण, पराक्रमी और उत्साही पुरुषों की हथेलियां बड़ी बड़ी होती हैं। छोटे हाथ वाले उतने पराक्रमी, दृढ़ निश्चयी और लगन के साथ काम करने वाले नहीं होते। बातें बहुत करते हैं, बड़ी बड़ी योजनायें बनाते हैं परन्तु छोटा हाथ उन्हें कुछ कहने लायक काम करने नहीं देता। यह भी देखा गया है कि बड़ी हथेली वाले छोटे अक्षर लिखते हैं और छोटी हथेली वालों से बड़े बड़े अक्षर लिखे जाते हैं।

जिन की हथेली अधिक मोटी, मुलायम और भारी होती है ऐसे व्यक्ति व्यसनी विषयी और इन्द्रिय लोलुप देखे जाते हैं। चौड़ी हथेली वाले मनुष्य उदार, भले मानस, दूसरों के साथ नेकी करने वाले और अनुभवी होते हैं। कैसी ही भली बुरी परिस्थिति में वे रहें परन्तु दिल उनका कभी ओछा न होगा। उदारता की मात्रा हर हालत में उनमें अधिक रहेगी।

लम्बी और नरम हथेली वाले आराम पसन्द और आलसी देखे जाते हैं। पर जिनकी हथेली सूखी, कड़ी और

पतली हो उनमें निरुत्साह और डरपोकपन भी मिलेगा। देखने में मोटे तगड़े हों तो भी उनमें शारीरिक और मानसिक जीवनी शक्ति कम पाई जायगी, जरा से परिश्रम में थकान महसूस करने लगेंगे।

जिनकी हथेली में बीचों बीच गड्ढे की सी गहराई होती है उन्हें आमतौर से अपने दुर्भाग्य का रोना रोते देखा जाता है। पर गृहस्थी में उन्हें निराशा मिलती है। स्त्री, पुत्र तथा अन्य घर वालों से उन्हें संतोष जनक सद्व्यवहार नहीं प्राप्त होता। मनो मालिन्य और गृह कलह से सदा ही वे उद्विग्न रहते हैं। स्वास्थ्य भी ऐसे लोगों का गिरा गिरा ही रहता है।

मजबूत किंतु मुलायम हथेली किसी मनुष्य के मनस्वी साहसी और शूरवीर होने का लक्षण है। ढीली टूटी सी, बिखरी सी या जकड़ी हुई सी हथेली उन अभागों की होती हैं जो काम के डर से सदा जी चुराया करते हैं, अपनी नालायकी को दूसरों के ऊपर थोप कर झूठा आत्म सन्तोष किया करते हैं।

बिलकुल गोल हथेली, जिसकी लम्बाई और चौड़ाई बराबर हो पराधीन, पराश्रित दूसरों की कृपा पर जीवित रहने वालों की होती है। मनोभावनाओं को दबाना, झिझकना, डरना और झूठ बोलना ऐसे लोगों की विशेषता होती है। पैसा होते हुए भी पैसे से मिलने वाले सुख उन्हें प्राप्त नहीं होते।

जिनकी हथेली इतनी लचकदार हो कि उँगलियों के अग्रभाग से मणिबन्ध (कलाई और हथेली के जोड़ की रेखा) का स्पर्श होजाय तो बहुत ही भाग्यवान और धन सम्पन्न होते हैं। उंगलियों से कुछ बड़ी हथेली होनी चाहिये किन्तु जिनकी हथेली उंगलियों से छोटी हो उन्हें नेत्र रोग घेरे रहेंगे। पेट साफ न रहने की शिकायत भी बनी रहेगी।

उंगलियां

उँगलियों में फैले हुए ज्ञान तन्तु मस्तिष्क और नेत्रों के साथ शरीर के अन्य अङ्गों के तन्तुओं की अपेक्षा विशेष संबंध रखते हैं। देखा जाता है कि जो लोग पंजा लड़ाने के शौक में व्यस्त होते हैं उनकी दृष्टि और मानसिक शक्ति कमजोर पड़ जाती हैं। जब मस्तिष्क किसी विशेष कार्य में व्यस्त होता है तो हाथों की उँगलियां अपने आप अनायास ही हिलने लगती हैं। जब काम न होते हुए भी उँगलियां काम कर रही हों, मनुष्य जमीन कुरेद रहा हो, उँगलियां हिला रहा हो तब समझना चाहिये कि इसका मस्तिष्क इस समय किसी उलझन को सुलझाने में लगा हुआ है।

उँगलियों के बीच में दो गांठें होती हैं। ऊपर की-नाखून के तरफ की गांठ बुद्धि विषयक (Mental) लक्षणों को प्रकट करती है। दूसरी, नीचे की-हथेली की तरफ की गांठ भौतिक (Material) वस्तुओं तथा स्वभावों का प्रकटी करण करती है। जो गांठ बड़ी हो उसी के अनुसार उसके स्वभाव को जाना जा सकता है। यदि ऊपर की गांठ बड़ी हो तो उस मनुष्य को विचार शील, दूर दर्शी, गुणवान, कलाकार तथा आध्यात्मिक गुणों से युक्त कहा जा सकता है। यदि नीचे वाली गांठ बड़ी हो तो धनवान, ऐश्वर्यवान, सांसारिक वस्तुओं में रुचि रखने वाला, भौतिक दृष्टिकोण वाला उसे समझा जा सकता है। यदि दोनों ही गांठें बड़ी २ हों तो उसे केवल एक कारीगर कह सकते हैं। जिसकी दोनों गांठें पतली और छोटी हों तो उसे थोड़े में सन्तोष कर लेने वाला, भाग्यवादी कहा जा सकता है ऐसे लोग प्रायः कोई बड़ी सफलता अपने जीवन में प्राप्त नहीं कर पाते।

मध्यमा उँगली की लम्बाई से, पूरी हथेली की लम्बाई १½ गुनी होनी चाहिये। यदि उँगलियां इससे अधिक लम्बी हों तो उस मनुष्य को श्रद्धालु, ईश्वर भक्त, धर्मभीरु, कल्पनाशील, तथा फूंक २ कर पांव धरने वाला समझना चाहिये। जिन की उँगलियां साधारण अनुपात से छोटी होती हैं वे अहंकारी, नास्तिक, चिड़चिड़े, जल्दबाज होते हैं। मोटी मोटी उँगलियों वालों के स्वभाव में उजड्डपन देखा जाता है किन्तु यदि वे कोमल और पतली हों तो हँसमुख, खुशमिजाज तथा हास्य परिहास पसन्दगी का लक्षण समझना चाहिये।

अँगूठे की तरफ से गिनने पर पहली उँगली को तर्जनी, दूसरी को मध्यमा, तीसरी को अनामिका, चौथी को कनिष्ठका कहते हैं। इनके लक्षणों का विवेचन करते समय निम्न बातों पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिये।

तर्जनी—तर्जनी को मध्यमा से एक अंगुल छोटा होना चाहिये। यदि इतनी ही लम्बाई उसकी हो तो औसतश्रेणी का स्वभाव होगा। यह लम्बाई अधिक हो तो अभिमान भोग विलास प्रिय उच्च पद पाने की इच्छा, शासन सत्ता में रुचि होने का चिन्ह कहा जा सकता है। यदि यह लम्बाई मध्यमा के बराबर हो उसे उपद्रवी, निष्ठुर स्वभाव, आत्म प्रशंसक माना जायगा।

यदि तर्जनी मध्यमा की अपेक्षा एक अँगुल से अधिक छोटी हो तो ऐसे मनुष्य शान्त स्वभाव वाले हैं परन्तु कोई जिम्मेदारी का काम अपने कन्धों पर लेने से या कोई साहस पूर्ण काम करने से बहुत डरते हैं। शरीर बल और बुद्धिबल की अपेक्षा मनोबल उनमें कम पाया जाता है। टेढ़ी मेढ़ी और

गांठ गठीली उँगलियों वाले प्रायः उद्देश्य हीन एवं अनिश्चित विचार होते हैं, दूसरों पर अपनी धाक जमाने में वे असफल रहते ही देखे जाते हैं।

मध्यमा—यदि हथेली की लम्बाई मध्यमा से १¼ गुनी हो तो मध्यमा को औसत श्रेणी का ठीक समझ लेना चाहिये। यदि इस अनुपात से वह कुछ बड़ी हो तो एकान्तवास, उदासी और चित्तभ्रम का कारण बनेगी। अगर वह अधिक लम्बी हो तो निर्बल इच्छा शक्ति, अकर्तव्यता और अस्वस्थता की सूचक मानी जायगी। जिनकी मध्यमा छोटी हो—अनामिका और मध्यमा के बराबर हो तो अशिष्ट व्यवहार, ओछे और गन्दे विचारों की अधिकता रहेगी। ऐसे आदमी कभी कभी जुआरी या सट्टेबाज भी देखे जाते हैं।

अनामिका—तर्जनी की अपेक्षा अनामिका की लम्बाई जितनी ही अधिक होगी उतना ही जीवन अधिक सुखमय, भोग ऐश्वर्यों से युक्त होगा, व्यापारिक कार्यों में उसे सफलता भी मिलेगी, मिलनसार स्वभाव का होगा। यश प्राप्त करने की इच्छा रहेगी और बहुत हद तक उसे प्राप्त भी करेगा। यदि उँगली तर्जनी की बराबर हो तो ऐसे मनुष्य का जीवन औसत श्रेणी से अधिक ऊँचा न हो तो सकेगा। आदर्शवादी विचार करते हुए भी कोई महत्व पूर्ण कार्य करने में उसे सफलता न मिलेगी। अगर अनामिका बहुत छोटी हो, तर्जनी से भी छोटी हो तो ऐसा स्वभाव होगा जिसके कारण पग पग पर विघ्न बाधाएँ और हानियां उठानी पड़ा करेंगी।

कनिष्ठका—अपने हाथ से कनिष्ठका की लम्बाई चार अंगुल होनी चाहिये। यदि लम्बाई इससे जरा अधिक हो तो

नेतृत्व, व्याख्यान शक्ति, प्रतिभा, विचारशीलता और तेजस्विता की निशानी समझनी चाहिये। यह लम्बाई कुछ और ज्यादा हो तो गम्भीरता और दार्शनिकता की अधिकता रहेगी। किंतु यह उँगली चार अंगुल से छोटी हो तो कम बोलना, चुप रहना, दूसरों द्वारा ठगा जाना, देर में समझ आना आदि कमजोरियां उस मनुष्य में देखी जावेंगी।

हथेली और चारों उँगलियों का जोड़ यदि एक सीध में में हो तो ऐसा मनुष्य बड़ा सरल स्वभाव भाग्यवान, धनवान और विद्वान होगा। तर्जनी का जोड़ अन्य उँगलियों की अपेक्षा अगर कुछ नीचा ऊँचा हो तो दूसरों पर असर डालने की ताकत कम होगी। मध्यमा का जोड़ अव्यवस्थित हो तो स्वभाव झगडालू होगा, शत्रुओं की अधिकता रहेगी। अनामिका का जोड़ ठीक जगह पर न हो तो उसे निन्दा का पात्र बनना पड़ेगा। कनिष्ठा का जोड़ ठीक न होने से आर्थिक संकट का सामना करने के अवसर अधिक आते हैं।

हर एक उँगली तीन भागों में बटी हुई है। उसका नाखून वाला ऊपर का छोर—आदर्श का—ज्ञान, कला कोशल और धार्मिक विचारों का प्रतीक हैं। बीच का भाग—ज्ञान का—निर्णय, विचार शक्ति और बुद्धिमत्ता का प्रतीक है। बीच का भाग-ज्ञान का-निर्णय व विचार शक्ति और बुद्धिमत्ता का प्रतीक है। नीचे का जड़ वाला भाग—प्रकृति का—लोक व्यवहार और कार्य कुशलता का प्रतीक है। जो भाग अधिक पुष्ट, बड़ा कोमल, चिकना और भरा हुआ होगा उसकी शक्ति मनुष्य में अधिक पाई जायगी जो भाग कमजोर, सूखा, छोटा, कठोर होगा उसकी शक्ति निर्बल एवं विकृत होगी। जितना बेडोल रूखा और कुरूप जो भाग होगा उसी अनुपात से वहां की शक्ति भी उलटा फल देने वाली, हानिकार एवं नष्ट भ्रष्ट पाई जायगी।

हाथ को बिलकुल ढीला छोड़ देने पर मालूम होता है कि उँगलियों की किसी विशेष ओर झुकाव है। इस झुकाव को देख कर भी मानसिक स्थिति का बहुत कुछ परिचय प्राप्त किया जा सकता है। कनिष्ठका, अनामिका और मध्यमा इन तीनों का झुकाव यदि तर्जनी की तरफ हो तो मनुष्य उत्साही, स्वतन्त्र विचार वाला, बड़ी २ योजनाएँ बनाने वाला और परिश्रम पूर्वक कार्य में जुटने वाला और विद्वान होगा। किन्तु तर्जनी सीधी रहनी चाहिये तो ही यह गुण होंगे यदि तर्जनी का झुकाव कनिष्ठका की तरफ होगा तो उसी अनुपात से उपरोक्त गुणों में कमी आ जायगी। अगर अन्य उँगलियों का झुकाव भी कनिष्ठका की तरफ हो तो वह दुर्गुणों, दुस्वभावों और अनिष्टों का सूचक समझा जायगा। तर्जनी यदि अंगूठे की तरफ झुकी हुई हो तो बहुत ही उत्तम और अच्छे स्वभाव की द्योतक है। तर्जनी को छोड़ कर अन्य तीनों उँगलियां यदि सीधी हों तो उस मन्द बुद्धि और मूढ़ मस्तिष्क का सूचक समझना चाहिये।

उँगलियों के बीच में फासला जितना अधिक होगा उतना ही मनुष्य दयालु, अनुभवी और सदाचारी होगा। तर्जनी और मध्यमा के बीच का अन्तर विचारों की स्वतन्त्रता का सूचक है। मध्यमा और अनामिका के बीच का अन्तर स्वभाव की दृढ़ता का चिन्ह है। अनामिका और कनिष्ठका के बीच का अन्तर भोग इच्छाओं की अधिकता का प्रतीक है। यदि उँगलियां अधिक समीप हों, फासला कम हो कुछ छिद्र भी रही हों तो उसे संशय वृत्ति और कुमार्ग की तरफ झुकाव का चिन्ह समझना चाहिये।

उँगलियों और हथेलियों की पीठ पर अधिक बाल होना रजोगुणी प्रकृति का चिन्ह है। सतोगुणी लोगों के यह बाल

थोड़े और मुलायम होते हैं, तामसिक वृत्ति के लोगों के हाथों पर घने, कड़े और बहुत काले बाल पाये जाते हैं। यदि बाल बिलकुल ही न हों तो उस व्यक्ति की नपुंसकता और कायरता की प्रवृत्ति होगी।

अंगूठा

हाथ में अँगूठे का वही स्थान है जो मुँह पर नाक का है। नाड़ी विशेषज्ञों का मत है कि मनुष्य के मस्तिष्क का अँगुल भाग (ThumbBrain) की कार्य प्रणाली के अनुसार जो विशेष प्रकार के कम्पन (Paralysis) उत्पन्न होते हैं ये मस्तिष्क से चल कर हाथ के अँगूठे पर ठहरते हैं और उस स्थान पर अपनी हलचलों का प्रभाव डालते हैं। जिससे अँगूठे की बनावट में भी अन्तर आ जाता है। इन बनावटों को देख कर स्वभाव का पता लगाया जा सकता है।

सीधा और सुदृढ़ अँगूठा मनुष्य के दृढ़ निश्चयी, स्वच्छन्द प्रकृति और निरंकुश स्वभाव का चिन्ह है। कोमल झुके हुए अँगूठे वाले का चित्त चंचल और डांवाडोल रहता है। दूसरों के बहकावे में ऐसा मनुष्य आसानी से आ जाता है।

अँगूठे में दो जोड़ हैं। एक नाखुन की जड़ में, दूसरा अँगूठे की जड़ में। अँगठा जोड़ों पर से समान झुका हुआ नहीं होता वरन् किसी एक जोड़ पर ही झुकाव अधिक होता है। यदि अँगूठे की जड़ वाले जोड़ पर से झुकाव अधिक हो तो समझना चाहिये कि यह मनुष्य विचारवान्, बुद्धिमान, परिस्थिति को समझ कर काम करने वाला होगा। कम खर्च, रूखे स्वभाव का और अपने मतलब में चौकस रहेगा। यदि दूसरे जोड़ पर

नाखून के पास वाली गांठ पर से झुकाव हो तो समझना चाहिये कि अधिक खर्च करने वाला, भावुक, दूसरों के लाभ के लिये स्वयं हानि सहने वाला, सीधा और छल छिद्र से रहित होगा। अगर थोड़ा झुकाव हो तो समझना चाहिये कि आत्म विश्वास विपत्ति में धैर्य तथा शत्रु से बदला लेने के भाव अधिक होंगे अगर झुकाव ज्यादा हो तो समझना चाहिये कि डरपोकपन, चापलूसी, एवं घबराहट की मात्रा अधिक रहेगी।.

अंगूठे को ऊपर से लेकर नीचे की तरफ तीन भागों में बांटा जा सकता है। अन्तिम सिरा—पोरुआ—जहां मुर्शी नाखून बढ़ा करता है—इच्छा शक्ति का स्थान है। बीच का स्थान वह है जहां बीच का गांठ या मोड़ होती है, यहां से विचार शक्ति का पता लगाया जा सकता है। नीचे वाला अन्तिम हिस्सा जिसे अँगूठे की जड़ या पहली गांठ कहते हैं प्रेम शक्ति की जगह है। इन तीनों स्थानों की कोमलता, सुन्दरता, स्वच्छता, और सुदृढ़ता को देखकर उस स्थान में रहने वाली शक्ति के बलवान होने का परिचय प्राप्त किया जा सकता है। इनमें से जो जगह फटी हुई सकुड़ी, सूखी दुर्बल, बेडौल और भद्दी हो समझना चाहिये कि यहां रहने वाली शक्ति भी अस्त, व्यस्त, अस्थिर, निर्बल और विकृत होगी।

ऊपर का—पोरुए वाला—इच्छा शक्ति का—स्थान, मध्य भाग से बड़ा न होना चाहिये अन्यथा झगड़ालू, बकवादी, क्रोधी जिद्दी स्वभाव होगा। विचार शक्ति का प्रथम स्थान है, यदि किसी कार्य पर विचार करने के पश्चात उसके करने का दृढ़ निश्चय किया जाता है तो परिणाम अच्छा होता है, परन्तु यदि बिना विचारे चाहे किसी बात पर अड़ जाने की आदत हो तो वह ठीक नहीं समझी जाती। इसलिये अंगूठे का बीच का भाग मोटा, भारी

और मजबूत होना अच्छा माना जाता है, आगे का हिस्सा उससे हल्का होना चाहिये। अंगूठे की जड़ जहां प्रेम का स्थान है-सीधा और भरी हुई हो तो समझना चाहिये कि वह स्थायी और मजबूत प्रेम करने वाला होगा, यदि जड़ ऊबड़ खाबड़, टेढ़ी-मेढ़ी, हो तो ऐसे मनुष्य 'क्षणे रुष्टा क्षणे तुष्टा' स्वभाव के होंगे। आज गहरी दोस्ती है तो कल गहरी दुश्मनी करते हुए भी इन्हें देर न लगेगी। जड़ की मोटाई साधारणतः बीच के भाग की अपेक्षा थोड़ी हो तो प्रेम की मात्रा उतनी ही समझनी चाहिये जितनी कि औसत दर्जे के आदमी में होनी चाहिये। यदि इससे न्यून या अधिक हो तो उसी अनुपात से प्रेम भावना की कमी बेशी का अनुमान किया जा सकता है।

संक्षेप में यों कहा जा सकता है कि लम्बे और समान आकार वाला अंगूठा बुद्धिमत्ता और चतुरता का चिन्ह है। छोटा-मोटा और बेडौल अंगूठा मूर्ख और क्रोधी होना प्रकट करता है। अधिक नुकीला हो तो अस्थिरता, चंचलता एवं उथलेपन का सूचक है। इसी प्रकार पोरुआ मोटा होतो हठी और जिद्दी होना, बीच में पतला हो तो स्वार्थी, रूखा, निष्ठुर प्रकृति होना प्रकट होता है। जिसके पोरुवे बहुत मोटे, चौड़े, भारी और फटे फटे से हों वह मनुष्य बहुत ही भयंकर होता है, क्रोध में आकर वह पागल हो जाता है तब उसे अर्थ अनर्थ कुछ नहीं सूझता। अवसर पड़ने पर वह दूसरों का कत्ल कर सकता है और अपनी आत्म हत्या के लिये भी तैयार हो सकता है।

अँगूठे की बनावट, तथा ऊर्ध्व मध्य और अग्रभाग का ढांचा, इन दोनों ही बातों पर विचार करने के पश्चात किसी परिणाम पर पहुँचना चाहिये।

नाखून

बनावट के अनुसार नाखूनों को चार भागों में विभक्त किया जा सकता है । (१) लम्बे (२) छोटे (३) चोड़े (४) पतले ।

लम्बे नाखून वालों के फेफड़े कमजोर और सीने पतले पाये जाते है। शारीरिक दृष्टि से वे प्रायः निर्बल होते हैं। ऐसे नाखूनों में यदि धारियां पड़ी हुई हों तो आंतों की खराबी भी होगी, इस प्रकार के लोगों को निमोनियां मोतीझरा और मयादी बुखार की संभावना अधिक रहती है।

लम्बे नाखून जिनमें नीलेपन की झलक होती है, रक्त की कमी और हिर्दय की अशुद्धता प्रकट करते हैं। नाखूनों की जड़ में अर्धचन्द्राकार सफेद गोला सा होना स्वस्थता की स्थिरता के लिये आवश्यक है यदि वह न हो तो नाड़ी संस्थान और मानसिक रोगों की सम्भावना बनी रहती है। जिन लोगों का ऊपर का धड़ रोगी रहता है उनके नाखून अपेक्षाकृत लम्बे होते हैं।

बहुत छोटे नाखून वालों की कमर से नीचे के रोग अधिक देखे जाते हैं। जंघाओं में, गुप्तेन्द्रिय में, पैरों में अकसर उन्हें अस्वस्थता के लक्षण दृष्टि गोचर होते हैं। सीप, या कोड़ी की तरह छोटे आकार के सिरे पर झुके हुए हों चपटे या मांस में गहरे गड़े हों तो पक्षाघात आदि आकस्मिक रोगों की आशंका अधिक रहती है। नाखूनों के बीच बीच में छोटे छोटे सफेद दागों का पड़ना स्नायविक दुर्बलता (Nervous debility) का पूर्व लक्षण कहा जा सकता है।

साधारण से अधिक लम्बे और अधिक छोटे नाखून शारीरिक दृष्टि से अस्वस्थता के चिन्ह हैं। परन्तु इनके मानसिक फल अलग अलग है। लम्बे नाखूनों वाले व्यक्ति शिष्ठ, विनम्र कोमल स्वभाव के और समझदार होते हैं परन्तु उनमें कभी कभी कोई खास सनक या वहम भी देखा जाता हैं। लम्बे नाखून यदि नीचे की ओर मुड़ गये हों तो कठोरता एवं बेरहमी उनमें पाई जायगी। साधारणतः नाखूनों का रङ्ग हलका गुलाबी होना चाहिए, परन्तु यह रङ्ग पीला हो तो चिड़चिड़ापन का लक्षण होगा, नीली झलक होना बालकों जैसे भोलेपन और श्रद्धा का चिन्ह है।

छोटे नाखूनों वाले लोग बहुत तार्किक और संशयी स्वभाव के होते हैं। दूसरों की हंसी उड़ाने, चिढ़ाने या निन्दा करने में उन्हें बड़ा मजा आता है। ऐसे आदमी चटोरे, मतलबी ढोंगी और बढ़ बढ़कर बात करने वाले किन्तु काम के वक्त मुंह छिपाने वाले पाये जाते हैं।

नाखूनों पर सफेद दाग पड़ना स्नायविक दुर्बलता के साथ साथ चिन्ता और मानसिक परिश्रम का भी लक्षण है। जो लोग मानसिक कार्य अपनी शारीरिक शक्ति से अधिक करते हैं उनके नाखूनों पर भी सफेद तिल पड़ने लगते हैं। एक ज्योतिषी ने इनका फल इस प्रकार लिखा है। अँगूठे में सफेद दाग हों तो स्नेह प्रेम, तर्जनी में हों तो देशाटन, अनामिका में हों तो सम्मान प्राप्ति और कनिष्ठका में हों तो आशा जनक भविष्य की प्राप्ति होती है। काला दाग किसी भी नाखून में हो

अच्छा नहीं समझा जा सकता। चोट लगने से जो नीले दाग पड़ जाते हैं, उससे शुभ अशुभ का कोई सम्बन्ध नहीं है।

शंख चक्र

हाथ की उंगलियों के अन्तिम सिरे में नाखूनों से नीचे के भाग में शंख और चक्र की आकृतियां देखी जाती हैं। यदि दोनों हाथों में बीच की उंगली में शंख और अन्य उँगली अँगुठों में चक्र हों तो बहुत ही शुभ हैं, ऐसे लक्षणों वाले राज ऐश्वर्य प्राप्त करते हैं। इसकी अपेक्षा शंख जितने अधिक हों और चक्र जितने कम हों उसी अनुपात से भाग्य निर्बल समझना चाहिये।

उंगलियों के अलावा हथेली के अन्य भागों में तथा उंगलियों के अन्य पोरुओं में भी शंख चक्र पाये जाते हैं। इनको संख्या को गिन कर फल का अनुमान किया जा सकता है। एक हाथ में शंखों की संख्या के फल इस प्रकार हैं—एक हो तो अध्ययन शील, दो हों तो दरिद्र, तीन हों से दुखी, चार–राजा के समान सुखी, पांच–विदेश से लाभ, छैः–विद्वान, सात–दरिद्र, आठ–सुखी जीवन, नौ नपुंसक, दस–राजा या योगी।

चक्रों का फल इस प्रकार है। एक–चतुर, दो–सुन्दर, तीन–विलासी, चार–दरिद्र, पांच–ज्ञानी, छै–चतुर, सात–अन्य प्रदेशों में विहार करने वाला, आठ–दरिद्र, नौ–शासक, दस–सेवक।

तिल

काले और लाल दो प्रकार के तिल मनुष्यों के शरीर में देखे जाते हैं। लाल तिलों का होना बहुत ही शुभ और भाग्यवान होने का चिन्ह समझा जाता है। परन्तु काले तिल में यह बात नहीं है। काले तिल स्थान भेद से शुभ और अशुभ दोनों प्रकार के हो सकते हैं।

यह भी देखा जाता है कि तिल जोड़ा से होता है। इसकी संख्या ऐसी होती है जिसे दो से विभाजित किया जा सके। एक स्थान पर तिल होगा तो उसके जोड़ में दूसरा तिल भी किसी अंग पर जरूर दीख पड़ेगा। बहुत करके तो जोड़े का स्थान नियत भी होता है। जैसे एक तिल माथे पर दाहिनी ओर हो तो उसका जोड़ा पेठ या बाहु पर होगा यह दाम्पत्ति जीवन के आनन्द मय होने का लक्षण है। माथे पर बांई ओर हो तो भी पेट या भुजा पर तिल होगा यह दाम्पत्ति-जीवन में मनोमालिन्य का कारण होता है। जिनकी बांई भों पर तिल होगा उनकी छाती पर भी बांई ओर जोड़ा देखा जायगा ऐसे आदमियों को यात्रायें बहुत करनी पड़ती हैं। दोनों भौं के बीच में तिल हो तो बीच पेट में उसका जोड़ मिलेगा ऐसे आदमी बकवादी और घमण्डी देखे जाते हैं। नाक के तिल का जोड़ा नाभि के निकट होता है यह प्रेम, खुशमिजाजी तथा यार बास होने का द्योतक है।

कनपटी के तिल का जवाब कुच पर मिलता है। यह दाहिनी ओर होना शुभ और बांई ओर होना अशुभ माना जाता है। कान की जड़ के आस पास के तिल का जोड़ा पेट पर होता है यह जिगर और आंतों की खराबी प्रकट करता है।

नाक की नोक का जोड़ा गुदा पर होगा यह अल्पायु होने की निशानी है। गाल का जोड़ा कूल्हे पर मिलता है यह दायें और बांये दोनों तरफ शुभ है। ऊपर के होट पर के तिल का जोड़ा जंघाओं में देखा जाता है यह कंजूसी का साइनबोर्ड समझा जा सकता है। नीचे के होट पर जो तिल होता है उसका जवाब घुटने पर होगा ऐसे आदमियों को विवाह शादी के मामले में बहुत दिलचस्पी होती है।

तर्जनी उँगली का तिल धनवान होने का, अधिक शत्रु होने, झगड़ा फिसाद रहने का कारण होता है। मध्यमा का तिल सुख शान्ति का देने वाला है। जिनकी अनामिका में होगा वे यशस्वी, पराक्रमी, धनवान और ज्ञानवान मिलेंगे। कनिष्ठका का तिल इस बात का प्रमाण है कि धन सम्पत्ति होते हुए भी वह व्यक्ति सुखी न रह सकेगा। अंगूठे का तिल कार्य कुशलता और लोक व्यवहार में प्रवीणता प्रकट करता है।

दाहिनी आंख में तिल होना बुद्धि की प्रखरता का चिन्ह है यह जितनी ही अधिक संख्या में हों उतने ही अच्छे हैं। बांई आंख में तिल होना यह बताता है कि इस आदमी को अपना बड़े संघर्ष और कठिनाइयों के साथ व्यतीत करना पड़ेगा। वस्तुओं की कमी उसे न रहेगी तो आराम में पड़ कर जिन्दगी भी न काट सकेगा।

गरदन का तिल श्रद्धालु ईश्वर भक्त और विनयी व्यक्तियों के होता है। ठुड्डी का तिल कमजोरी—कायरता और जनानेपन का निशान है। पैरों के तिल मनुष्य को एक जगह बैठने नहीं देते उसे यहां से वहां और वहां से यहां भागना पड़ता है।

स्त्रियों की नाक पर तिल होना उनके सौभाग्य का चिन्ह

है। ऐसी स्त्रियां पति की ओर से असन्तुष्ट नहीं रहतीं। जिनके बांए तरफ तिल ज्यादा हों तो सन्तानों में पुत्र अधिक होते हैं, दाहिनी ओर के तिल होने कन्याओं की संख्या अधिक रहती है। गाल पर तिल होने से स्त्री की भावुकता और प्रणय सुख की अभिलाषा विशेष मात्रा में पाई जाती है।

भुजाओं पर तिल वाले बहादुर, पेट पर तिल वाले चटोरे व छाती पर तिल वाले पराक्रमी, पीठ पर तिल वाले परिश्रमी, उन्नतिशील और चूतड़ पर तिल वाले उत्साहीन, पराया आसरा तकने तकने वाले होते हैं। गुप्त स्थानों के तिल वाले कामुकता की मात्रा अधिक होना प्रकट करते हैं। बारह से कम संख्या में तिल होना शुभ है। इससे अधिक हो तो शारीरिक और मानसिक अस्वस्थता के लक्षण समझने चाहिये। आम तौर से दाहिनी ओर के तिल, बांई ओर की अपेक्षा अधिक शुभ और लाभदायक होते हैं।

ग्रह–विचार

हाथ में सात ग्रहों के स्थान नियत हैं। राहु केतु समेत या तो नौ ग्रह होते हैं परन्तु प्रधान ग्रह सात ही हैं जिनके नाम पर कि सप्ताह के सात दिनों का नाम–करण किया गया है। इनमें से छै ग्रहों का स्थान तो एक एक है परन्तु मंगल के दो स्थान हैं। इन नियत स्थानों में से जो स्थान ऊँचा उठा हुआ हो, कुछ बढ़ा हुआ और कड़ाई सा लिये हुए हो समझना चाहिये कि वह उसी ग्रह की शक्ति की प्रधानता है। इस उठे हुए स्थान का फल उस ग्रह के स्वभाव के अनुकूल ही होता है।

हाथ की ग्रहों का स्थान

१—चन्द्रमा

२—मंगल

३—बुध

४—बृहस्पति

५—शुक्र

६—शनि

७—सूर्य्य
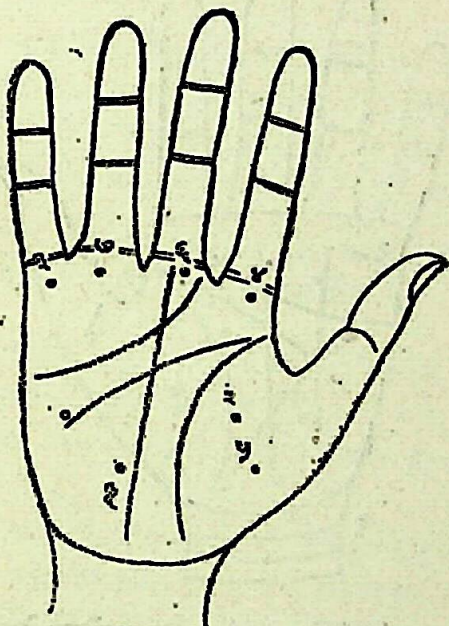
हाथ की रेखाओं का परिचय
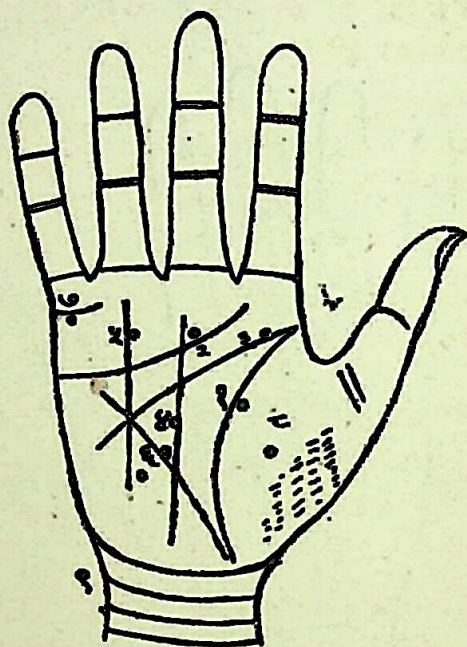
१—जीवन रेखा
२—मस्तक रेखा
३—हृदय रेखा
४—भाग्य रेखा
५—सूर्य्य रेखा
६—आरोग्य रेखा
७—विवाह रेखा
८—सन्तान रेखा
९—मणिवन्ध रेखा

अलग चित्र में ग्रहों के स्थान बताये गये हैं। नीचे उसका कुछ विवरण दिया जाता है।

सूर्य—अनामिका उँगली की जड़ में नीचे की तरफ सूर्य का स्थान होता है। इसके ऊँचा होने से निम्न बातें मानी जा सकती हैं, उन्नति की तीव्र इच्छा, कला-प्रेम, चित्रकारी, कविता, साहित्य, सौन्दर्य प्रेम, यश, तीर्थ यात्रा, धर्म रुचि, विद्या, प्रतिष्ठा।

सुन्दरता, शक्ति, सम्पत्ति, पितृ सुख, आत्मिक स्थिति का परिचय भी सूर्य स्थान को देख कर किया जाता है।

चन्द्र—मणिबन्ध के पास चन्द्र का स्थान है। इसे देख कर मातृ सुख, मानसिक विचार धारा, स्त्री सुख, धन धान्य, प्रकृति प्रेम, आदर्शवाद, विचार मग्नता, राजा की प्रसन्नता का विचार किया जाता है।

मंगल—मंगल के दो स्थान चित्र में दिये हुए हैं. इन स्थानों को देख कर बल, पराक्रम, पेट के रोग रक्त विकार, स्वास्थ्य, मातृ सुख, भूमि, पुत्र, कुटुम्ब की स्थिति को जाना जाता है।

बुध—कनिष्ठका उँगली की जड़ में बुध का स्थान है। इसके द्वारा विद्या, बुद्धि, व्यापार, शिल्प, सौभाग्य, काव्य, देशाटन, विचारों की अस्थिरता व उथलापन, वाक् शक्ति, विवेक तथा मित्रों का विचार किया जाता है।

बृहस्पति—तर्जनी की जड़ में बृहस्पति का स्थान है। इसे देख कर मान प्रतिष्ठा, धर्म, स्वाभिमान, उत्साह, न्याय प्रियता, भोग विलास की इच्छा, बड़ा आदमी बनने की लालसा, बुद्धि, विद्या, तथा विवेक शीलता का परिचय प्राप्त होता है।

शुक्र—शुक्र का स्थान अँगूठे की जड़ से लेकर मणिबन्ध तक है। इससे स्त्री सुख, विवाह, स्नेह, सौन्दर्य, प्रतिभा, प्रताप, मनोरंजन, सवारी, आभूषण, काम वासना का आभास मिलता है।

शनि—मध्यमा उँगली की जड़ में शनि का स्थान है। यह क्लेश दुःख, पीड़ा, व्यसन, जुआ, असफलता, मौन, एकान्त वास, उदासी, निराशा तथा दुर्भावों को प्रकट करता है। वैराग्य, सन्यास, किंकर्तव्य विमूढ़ता का भी इस स्थान को देख कर पता लगाया जा सकता है।

यदि नियत स्थान अच्छी तरह उभरे हुए हों तो ग्रह का नियत फल भले रूप में समझना चाहिये। यदि कोई उठाव न हो तो फल का प्रश्न ही नहीं उठता। गड्ढा, बहुत ऊंचा उठाव, टेढ़ा मेढ़ा पन, गांठ या इसी प्रकार की कोई बेडौल स्थिति नियत स्थान पर हो तो जो बातें ग्रह से जानी जाती हैं वे सभी बातें विकृत और बुरा परिणाम उपस्थित करने वाली समझनी चाहिये।

हाथ की रेखाऐं

हाथ की प्रमुख रेखायें चित्र नं० २ में देखी जा सकती हैं। नम्बरों के परिचय इस प्रकार है।

(१) जीवन रेखा—इसे पितृ रेखा, आयु रेखा, गोत्र रेखा, कुल रेखा, Lifeline भी कहते हैं। तर्जनी और अँगूठे के बीच से चल कर शुक्र के स्थान को घेरती है। इससे आयु का विचार किया जाता है।

(२) मस्तक रेखा—इसे धन रेखा, मातृरेखा, Head line भी कहते हैं। हथेली के मध्य भाग में होती है। बुद्धि बल का इससे पता चलता है।

(३) हृदय रेखा—इसे अन्तःकरण रेखा और Heart line भी कहते हैं। मस्तक रेखा के ऊपर समानान्तर में होती है। इसके मनुष्य दृष्टिकोण, उद्देश्य लक्ष और विश्वास का परिचय मिलता है।

(४) भाग्य रेखा—इसे ऊर्ध्व रेखा या Fate line भी कहते हैं। हाथ के मध्य भाग में होकर शनि के स्थान को स्पर्श करती है। इससे प्रारब्ध का ज्ञान होता है।

(५) सूर्य रेखा—इसे विद्या रेखा या Life of sun भी कहते हैं। हथेली की जड़ में से चल कर अनामिका उँगली की तरफ जाती है। इससे विद्या का यश और प्रतिभा की जानकारी होती है।

(६) स्वास्थ्य रेखा—इसे आरोग्य रेखा या Health-line भी कहते हैं। बुध के स्थान से हथेली की जड़ की तरफ तिरछी जाती है। इससे स्वास्थ्य का विचार किया जाता है।

(७) विवाह रेखा—इसे अंग्रेजी में Line of marriage कहते हैं। यह बुध की उँगली से नीचे हृदय रेखा की बराबर होती है। इससे स्त्री सुख के सम्बन्ध में ज्ञान होता है।

(८) सन्तान रेखा—अँगूठे की जड़ और कलाई के बीच में हथेली पर आरम्भिक भाग में जो छोटी २ रेखायें हैं उनको संतान रेखा कहते हैं।

(६) मणिबन्ध रेखा—इसे Bracelet line भी कहते हैं। यह तीन रेखाऐं कलाई में होती हैं।

इनके अतिरिक्त शुक्र मुद्रिका, चन्द्ररेखा, मङ्गल रेखा, वान्धव रेखा, प्रवास रेखा आदि अनेक मोटी २ रेखायें पाई जाती हैं। वे इतनी महत्व पूर्ण नही हैं। ऐसी रेखाओं का वर्णन इस छोटी पुस्तक में हो भी नहीं सकता, इसलिये उनका समावेस यहां नहीं किया जा रहा है।

रेखाए' सीधी और स्पष्ट होनी शुभ है। जंजीरदार, लहरदार या बहुत गहरी हों तो उन्हें दोष पूर्ण समझना चाहिये। जिस मनुष्य के हाथ में रेखाए' बहुत ही थोड़ी हों तो वह दरिद्र और दुखी होगा। छोटी २ रेखायें एक दूसरे को काटती हुई जाली से बुनें तो शरीर की कमजोरी खास कर नाड़ियों की निर्बलता समझनी चाहिये। ऐसे आदमी थोड़े परिश्रम से थक जाते है। पल्लवदार रेखायें क्लेशदायक, टूटी फूटी रेखाए' अल्प जीवन, कहीं मोटी, कहीं पतली रेखायें होना क्लेश कारक है। टेड़ी रेखायें दरिद्रता की निशानी है। चिन्ता और शोक में डूबे रहने वालों की रेखायें पीली पड़ जाती हैं। उग्र कड़ुआ और क्रोधी स्वभाव हो तो रेखायें लाल पड़ जावेंगी। पीलापन खून की कमी का और कालिमा कठोर स्वभाव का चिन्ह है। दुहरी या शाखायुक्त रेखायें अधिक फल दायक होती हैं। हृदय रेखा से ऊपर जाने वाली रेखायें शुभ और नीचे जाने वाली अशुभ समझी जाती हैं।

रेखाओं के फल

जीवन रेखा—साधारणत: यह रेखा बृहस्पति के स्थान से कुछ नीचे ही आरम्भ हो जाती है। परन्तु यदि ठीक बृहस्पति के स्थान से आरम्भ हो तो दीर्घजीवन, उच्च अभिलाषा और आशा वाद का चिन्ह है। शुक्र के स्थान को घेरती हुई मणिबन्ध की रेखा तक चली गई हो तो १०० वर्ष के करीब आयु कही जा सकती है। बीच २ में रुक गई हो या बिगड़ गई हो तो बार २ बीमार पड़ने की निशानी है। जितनी बार टूटी हो उतनी ही बार भयानक रोग या जीवन संकट का मुकाबिला करना पड़ेगा। जीवन रेखा का लम्बा, साफ और स्पष्ट होना निरोगता और बड़ी आयु का सूचक है, यह छोटी होती है तो मनुष्य अल्प आयु ही भोगने पाता है।

जब दो जीवन रेखायें बराबर बराबर चलती है तो भीतर वाली को मंगल रेखा कहते हैं। मंगल रेखा का होना, आपत्तियों से बचाव, आकस्मिक धन की प्राप्ति बहादुरी और सच्चरित्रता की निशानी है। जीवन रेखा अँगूठे की जड़ में से आरम्भ होती हो तो ऐसा मनुष्य सन्तान की ओर से दुखी रहता है।

इस रेखा को तीन हिस्सों में बांट कर बालकपन, युवावस्था और वृद्धावस्था के शरीर सुख के बारे में जाना जा सकता है। जो तिहाई मजबूत, स्पष्ट और साफ हो वह अवस्था अच्छी बीतती है। जो टुकड़ा टूटा फूटा या पतला हो तो समझना चाहिये कि जीवन का वही भाग शारीरिक दृष्टि से कष्ट के साथ बीतेगा। जड़ में बालकपन, बीच में युवावस्था और अन्त भाग से वृद्धावस्था का विचार करना चाहिये।

केवल जीवन रेखा ही नहीं अन्य रेखाओं को भी इसी प्रकार तीन भागों में बांटकर उस रेखा का फल किस आयु में क्या होगा यह जाना जा सकता है।

गुरु, शनि या मङ्गल के स्थान ऊँचे उठ रहे हों और उन स्थानों को जीवन रेखा आच्छादित कर रही हो तो यह अस्वस्थता का चिन्ह है। चन्द्र स्थान की ओर जाती हो तो व्यसन और बेचैनी की अधिकता रहती है। सूर्य स्थानकी ओर जा रही हो तो धनी, इज्जत वाला और राजदरबार में प्रतिष्ठित होता है। जिन की यह रखा बुध स्थान की ओर झुकती है वे आम तौर से व्यापार में अपना जीवन लगाते हैं, कोई शाखा फूट कर यदि शुक्र स्थान की ओर चले तो ऐसे मनुष्यों को आज यहां कल वहां रहना पड़ता है।

जिसके हाथ में जीवन रेखा बिल्कुल न हो उसकी मृत्यु अस्वाभाविक तरीके से होती है यह रेखा यदि किसी अन्य रेखा से मिली हो तो उस रेखा का फल जीवन में विशेष रूप से देखा जाता है। यह नियम प्रायः सभी रेखाओंके बारेमें है कि जो जो रेखाऐं आपस में मिली हों उनका सम्मलित फल अवश्य दृष्टि गोचर होता है। किस उम्र में वह फल मिलेगा इसका निर्णय तीन भागों में बांट कर बालकपन, यौवन और वृद्धावस्था का निर्णय किया जा सकता है।

रेखा के बीच में गोल चिन्ह सा प्रकट होता है, उसे द्वीप कहते हैं। यह द्वीप जीवन रेखा में या अन्य रेखाओं में विघ्न उपस्थित करते हैं। गहरे द्वीपों की अपेक्षा उठे हुए द्वीप अधिक बाधक होते हैं। जो रेखा जिस रेखा को काट देती है उसका फल अशुभ होता है। जैसे धन रेखा विवाह रेखा को, काटती हो तो दाम्पत्ति जीवन में पैसे का अभाव सदा ही

खटकता रहेगा। काटना अशुभ है परन्तु मिलना शुभ है। दो रेखाऐं आपस में मिलती हों तो संयुक्त फल मिलता है जैसे विवाह रेखा धन रेखा से मिले तो पानी के आगमन के साथ साथ फन का आगमन भी होता है। जो रेखाये' जिस रेखा के अधिक समीप होती है। इसका असर भी अवश्य होता है जैसे मस्तक रेखा और हृदय रेखा बहुत पास पास होकर गइ हों तो समझना चाहिये कि मस्तिष्क में हृदयगत भावों की ही प्रधान रहेगा। मन में राम बगल में छुरी रखने वाले ऐसे आदमी नहीं देखे जा सकते। कोई रेखा जड़ में ही अधिक पुष्ट हो तो समझना चाहिये कि यह गुण या वस्तु इसे पैतृक रूप में बिना परिश्रम के ही अधिक मात्रा में मिल जायगी किसी रेखा का अचानक एक दम रुक जाना, बीच में ही रुक जाना, आकस्मिक झटके का लक्षण है। जीवन रेखा यदि इसी प्रकार रुके तो हार्टफेल, आदि आकस्मिक कारणों से मृत्यु होना प्रकट होता है। अचानक भाग्य रेखा रुक जाय तो कोई भारी धन नाश की घटना घटने की सम्भावना रहती है।

मस्तक रेखा—मस्तक रेखा चन्द्र व मङ्गल के उठे हुए स्थानों को आच्छादित करती हो तो तीव्र बुद्धि, विवेकशीलता और स्पष्ट विचार प्रकट होते हैं। केवल चन्द्र के स्थान को छूती हुई नीचे की ओर झुक जाय तो स्मरण शक्ति की कमी बताती है बीच बीच में टूटती फूटती हुई पूरी हथेली को पार कर जाय तो चालाकी, कूटनीति, धूर्तता और ठगी की अधिकता होती है।

मस्तक रेखा का अन्तिम सिरा यदि कलाई की ओर झुका हुआ हो तो यह व्यवहार कुशलता, हाजिर जवाबी मौकापरस्ती और बढ़ी हुई मानसिक शक्ति का ज्ञान करती है।

ऊपर की ओर सिरा झुक रहा हो तो दिमागी अय्यारी, लप-चिकनापन और वहम की अधिकता जाहिर होती है।

जीवन रेखा और मस्तक रेखा में जितना ही फासला होगा मनुष्य उतना ही साहसी, उक्कर्म करने वाला, वैरागी, निर्भीक, जिन्दगी की या हानि लाभ की परवाह न करने वाला होगा। दुहरी मस्तक रेखा हो तो असाधारण दुनी बुद्धिमता का लक्षण है। यह शाखायें निकलकर सूर्य के स्थान की ओर जाय तो प्रभावशाली विचारों का होना और बुध के स्थान की ओर जाय तो शाखज्ञ होना प्रकट होता है।

यह रेखा यदि गुरु के स्थान से निकल कर जीवन रेखा को छूती हुई आगे गई हो तो यह महापुरुष होने का चिन्ह है, ऐसे आदमी अपने जीवन में बड़े महत्व के काम करते हुए देखे गये हैं। इनकी ईमानदारी और दृढ़ता प्रशंसा के योग्य होती है।

लहरदार मस्तक रेखा वाले आधे पागल होते हैं। जंजीरदार रेखा वाले घर में सदा कलह मचाये रहते हैं। बहुत सी छोटी छोटी लाइनों से वह कट रही हो तो कई प्रकार के मानसिक रोग देखने में आते हैं। यदि बहुत सी छोटी छोटी शाखायें निकल कर हृदय रेखा की ओर जारही हो तो ऐसे व्यक्ति धुन के पक्के और स्वभाव के मीठे मिलेंगे।

हृदय रेखा—हृदय रेखा से प्रेम, प्रसन्नता और आदर्श का ज्ञान होता है। यह रेखा बीच में फटी टूटी हो तो मतलब की मुहब्बत, जरा सी बात में रंज और जरा सी बात में खुशी मौका पड़ते ही धर्म को भूल जाना यह तीन दुर्गुण देखे जायेंगे। उँगलियों से इस रेखा में जितना ही फासला होगा उतनी

ही सचाई स्थिरता और वफादारी पाई जायगी, गुरु के स्थान के निकट यदि इसमें से दो शाखायें फूटें तो साधु, दयालु, परोपकारी और लोक सेवक वह मनुष्य होगा। वृद्ध पुरुषों और देवताओं की भक्ति करने वालों के हाथ में हृदय रेखा गुरु स्थान की सीध में पहुँच कर कुछ अधिक मोटी हो जाती है। तर्जनी और मध्यमा के बीच भाग में यह रेखा मिलती हो तो व्यभिचार की ओर झुकाव अधिक रहता है। यदि तर्जनी के नीचे यह रेखा समाप्त होती हो तो अपने मित्रों से बार बार निराशा होती है, प्रेमी और आत्मीय कहलाने वाले लोग समय पर अक्सर उसे धोखा दे जाते हैं।

भाग्य रेखा—पूर्व संचित शुभ कर्मों के कारण क्या क्या सुख इस जीवन में मिलने वाले हैं इसका पता भाग्य रेखा के द्वारा बताया जा सकता है। यदि यह रेखा बीच में टूटी हुई न हो वरन् सीधी, सरल और सुन्दर हो तो बहुत ही अच्छा फल देने वाली है। ऐसे व्यक्तियों को धन, ज्ञान, स्वास्थ्य प्रतिभा और प्रेम की कमी नहीं रहती। जिनके हाथ में यह रेखा बिलकुल न हो वे प्रायः निर्धन और दुखी दरिद्री रहते हैं। मणिबन्ध से चलकर शनि के स्थान तक पहुँचने वाली भाग्य रेखा, बुद्धिमता, समृद्धि और सुख सौभाग्य का होना प्रकट करती है। इसका अन्तिम सिरा ऊपर की ओर झुका हुआ हो तो ऐसा व्यक्ति सदा सुखी रहेगा। किसी अवसर पर उसे मन मार कर बैठना न पड़ेगा। समय पड़ने पर आवश्यक वस्तुयें अनायास ही उसके पास आजावेंगी। जिसका अन्तिम सिरा नीचे की ओर मुड़ गया हो वह धनवान होते हुए भी आपत्तियों में फँसा रहता है आये दिन कोई न कोई झंझट उसके सामने खड़े रहते हैं।

भाग्य रेखा यदि चन्द्र स्थान से आरम्भ होती हो तो उस मनुष्य में ऐसे गुण होते हैं जिनके कारण सर्वत्र प्रशंसा होती है। यदि यह रेखा बुध के स्थान तक चली जावे तो मनुष्य शास्त्रज्ञ, प्रज्ञावान और नेता होता है। सूर्य के स्थान तक जाय तो शिल्पी कारीगर और कलाकार होता है। गुरु के स्थान तक गई हो तो नीति निपुण, कठिन कामों को सरल करने वाला और प्रतापी होता है। बुध के स्थान तक जाय तो व्यापार में अच्छी सफलता उसे मिलती है। किन्तु शनि के स्थान तक पहुँचे तो उसे दुर्भाग्य का सूचक समझना चाहिये।

आनामिका की जड़ की ओर जारही हो तो बहुत से लोगों के सहयोग से ही सुखी और समृद्ध हो सकता है। अकेला कुछ बड़ा काम करने में समर्थ नहीं हो सकेगा। कनिष्ठका के मूल की तरफ जा रही हो तो परदेश में पुजता है और परदेश से ही धन लाभ होता है। अपने रहने के स्थान में उसे न तो यश प्राप्त होता है और न धन। भाग्य रेखा शुक्र के स्थान से निकलती हो तो दूसरों के ऊपर उसका भाग्य आश्रित रहता है। पैतृक सम्पति या अनायास धन की इसे प्राप्ति होती है। किन्तु दूसरों के प्रभाव में उसे रहना पड़ता है। शुरू में यदि दो शाखायें फटी हुई हों तो घर के लोगों की अपेक्षा गैर शख्सों की मदद उसे बहुत मिलती है। यदि भाग्य रेखा हृदय रेखा से मिले तो उसे स्त्री का तथा अन्य मित्रों का प्रेम बहुत प्राप्त होता है।

यदि भाग्य रेखा शनि के स्थान पर पहुँच कर बृहस्पति के स्थान की ओर मुड़ जावे तो वृद्धवस्था में अधिक उन्नति होती है। यदि मूल में मस्तक रेखा और भाग्य रेखा जुड़ी हुई हों तो समझना चाहिये कि बौद्धिक कार्यों से सुख मिलेगा।

यदि वह नीचे जाकर दो भागों में बट गई हो तो देशाटन में विशेष रुचि होना प्रकट करती है।

सूर्यरेखा—यह रेखा मूर्ख, अशिक्षित, भाग्य हीन, निर्धन बदनाम तथा तुच्छ पुरुषों के हाथ में नहीं होती। जिसके हाथ में होती है वह निश्चय ही बड़ा भाग्य शाली और प्रतभाशाली होता है। भाग्य रेखा यदि हाथ में न हो तो सूर्य रेखा, धन रेखा का काम करती है।

यदि सूर्य रेखा की जड़ जीवन रेखा से मिली हुई हो तो वह मनुष्य कोई बड़ा कलाकार होता है। चन्द्र स्थान से निकले तो दूसरों की सहायता से उन्नति करने वाला और यशस्वी होता है। मंगल के स्थान से निकले तो अनेक विघ्न बाधा और संघर्षों से लड़ने के बाद उसे सफलता प्राप्त होती है। हृदय रेखा से निकले तो अनेक गुणों की विशेषता और वृद्धावस्था में यशस्वी होने का चिन्ह है। दो सूर्य रेखाएं हों तो अचानक यश और धन में वृद्धि होती है। यदि मस्तक रेखा से निकली हो तो युवावस्था में दिमागी शक्ति द्वारा कोई बड़ी सफलता मिलती है। मणिबन्ध के पास से निकले तो वह आदमी ऐसा भाग्यशाली होता है कि मिट्टी पकड़े तो सोना बन जाय। यदि जीवन रेखा के भीतर से निकले तो प्रेम के द्वारा धन, यश या पद की प्राप्ति होती है। भाग्य रेखा से निकलती हो तो अपने प्रयत्न से ही उसका उत्थान होता है।

यदि सूर्य रेखा अन्त में त्रिशूल की तरह तीन रेखाओं वाली होजाय तो उसकी शक्ति कई तरफ बट जाती है इस लिये किसी एक कार्य में अधिक सफलता प्राप्त नहीं होती। सूर्य रेखा जिस ग्रह के स्थान पर जाकर समाप्त होती हो

उसी ग्रह के गुणों को बलवान बनाता है जैसे बुध के स्थान पर समाप्त हो तो व्यापार, विज्ञान, साहित्य यश और सार्वजनिक जीवन में सफलता प्राप्त होती है। इसी प्रकार गुरु या शनि के स्थान का फल समझना चाहिये।

स्वास्थ्य रेखा—स्वास्थ्य रेखा का जीवन रेखा से न मिलना शरीर की दृढ़ता, दीर्घायु, और बलवान होने का चिन्ह है यदि मिली हुई हो तो आये दिन कुछ न कुछ शारीरिक कष्ट खड़ा रहता है। सामुद्रिक विद्या के पारङ्गत पण्डित शेरो (Cheiro) ने अपनी पुस्तक (Pal mistry far all) में लिखा है कि स्वास्थ्य रेखा तन्दुरस्ती का थर्मामीटर है। जिन दिनों मनुष्य बीमारी में ग्रस्त होता है या बीमार पड़ने का होता है उस समय यह रेखा गहरी और भयानक हो जाती है पर जब शरीर स्वस्थ होने लगता है तो यह रेखा धुंधली पड़ जाती है। इसमें से जितनी शाखाऐं फूटती हों उतने ही किस्म के रोगों का अधिक दबाव रहता है।

यह रेखा चन्द्र स्थान तक चली जाय तो मनोविकारों की अधिकता और वीर्य सम्बन्धी रोगों का आस्तित्व प्रकट होता है। स्वास्थ्य रेखा हर किसी के हाथ में हो यह आवश्यक नहीं है। सच तो यह है कि इसका न होना ही होने की अपेक्षा ज्यादा अच्छा है। जिनके हाथ में यह नहीं होती वे उतने बीमार नहीं पड़ते। इसका दुहरा होना चरित्र की पवित्रता और अच्छे स्वास्थ्य का चिन्ह है! पीले रङ्ग की हो तो कलेजे की बीमारी का होना बताती है। स्वास्थ्य रेखा मस्तक रेखा से मिलती हो तो जीवनी शक्ति का अभाव प्रकट होता है ऐसे आदमी थोड़े परिश्रम से बहुत थक जाते हैं। यदि यह रेखा मस्तक रेखा और हृदय रेखा के बीच में होकर निकली हो और

अधिक लालिमा युक्त हो तो मूर्छा, मृगी, पागलपन, सनक आदि मानसिक रोगों की निशानी है।

विवाह रेखा—कनिष्ठका उङ्गली और हृदय रेखा के बीच में जो छोटी किन्तु गहरी रेखा बुद्ध के स्थाने की तरफ आती है वह विवाह रेखा कहलाती है। इसी के द्वारा स्थायी विवाह का परिचय प्राप्त होता है, इसमें से जो शाखाऐं निकलती हैं वे उपपत्नियों की अधूरे विवाहों की सूचना देती है। विवाह रेखा जितनी गहरी और बिना टूट फूट की होती है जो से प्रेम भी उतना ही अच्छा निभता है बीच में उथलापन, या टूटना प्रेम मार्ग को हलका ओछा और विघ्न युक्त बनाता है। यदि रेखा बीच में स्पष्ट रूप से बिलकुल टूट गई हो तो पत्नी से सम्बन्ध विच्छेद या मृत्यु की सूचना है। कई जगह यदि टूट गई हो तो ऐसे ही कटु अवसर कई बार आ सकते हैं।

यदि यह सूर्य रेखा से मिलती हो धनी घर में विवाह होना बताती है किन्तु यदि उसे काटकर आगे बढ़ जाय तो विवाह के बारे में किये गये बड़े बड़े मनसुबे धूल में मिल जाते हैं। विवाह रेखा में से कोई शाखा निकल कर हृदय रेखा तक पहुँचे तो रोगी पत्नी के साथ विवाह होता है। मङ्गल के स्थान से निकल कर कोई छोटी पतली रेखा विवाह रेखा में जा मिले तो विवाह के फल स्वरूप रोज रोज झगड़े का और क्लेश का सामना करना पड़ता है। ऐसी ही कोई पतली सी रेखा शुक्र के स्थान से निकल कर विवाह रेखा में आ मिले तो पत्नी परेशानी की जड़ बन जाती है। सांप छछूंदर की गति में उसे सदा उलझा रहना पड़ता है जीवन रेखा और विवाह रेखा में फासला अधिक हो तो पति पत्नी में सदा मत भेद बना रहता

है। सूर्य स्थान से चलकर कोई पतली रेखा विवाह रेखा में मिले तो सब प्रकार सुख शान्ति और सन्तोष होने का लक्षण है।

विवाह रेखा और हृदय रेखा के बीच का फासला देखकर शादी किस उम्र में होगी यह जाना जा सकता है। यदि बहुत समीपता हो तो बालकपन में ही विवाह हो जाता है यह फासला जितना ही अधिक होता जाता है विवाह की आयु में उतनी ही देरी समझनी चाहिये साधु महात्माओं के हाथ में विवाह रेखा स्त्री की सूचना नहीं देती वरन् भक्त और शिष्यों के सम्बन्ध में ज्ञान कराती है। यह फांकदार हो तो स्त्री पुरुषों का अलग अलग रहना या मनों में फांक रहना प्रकट होता है। मस्तक रेखा और जीवन रेखा का मिलना स्त्री के प्रति अधिक आकर्षित होने वाले स्वभाव का लक्षण है। जिनकी विवाह रेखा सर्प की तरह टेढ़ी मेढ़ी चलती है वे अपनी पत्नी के लिये बड़े कर्कश होते हैं। जो बातें पुरुष के हाथ में पत्नी के सम्बन्ध में हैं उन्हें ही पत्नी के हाथ में पति के सम्बन्ध में समझना चाहिये।
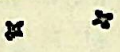
मणिबन्ध - हाथ के नीचे की ओर झुकाने से कलाई पर जहां नाड़ी देखी जाती है उस जगह कुछ सलवटें सी पड़ती हैं। इनको मणिबन्ध—या कलाई की रेखायें कहते हैं। अक्सर यह तीन होती हैं। ज्योतिषी शेरों के मत से इनमें से पहली से तन्दुरस्ती (Heath) दूसरी से धन (Wealth) और तीसरी से सुख शान्ति (Prosperity) जानी जाती हैं। किन्तु भारतीय सामुद्रिक विद्या के अनुसार इनमें से पहिले से धन, दूसरी से विद्या, और तीसरी से प्रेम भाव और सत स्वभाव का पता चलता है।

जो रेखा पूर्ण और स्पष्ट हो उसका गुण भी पूर्ण और स्पष्ट होना चाहिये। अधूरी, टेढ़ी, मेढ़ी, बीच में रुकी हुई रेखा से उसका फल भी नष्ट भ्रष्ट और अधूरा ही होता है। जो रेखा बिलकुल ही न हो उस विषय का प्रायः अभाव हो रहता है।

इन रेखाओं से आयु का अनुमान भी लगाया जाता है। हर एक रेखा से ३० वर्ष का आयु का अन्दाज है अगर तीनों रेखाएं साफ हों तो ९० वर्ष की आयु कही जा सकती है। इसमें जितनी कमी है उतनी आयु भी कम होती है जैसे किसी के मणिबन्ध में १॥ रेखा हो तो उसकी आयु लग भग ४५ वर्ष होगी।

संतान रेखाऐं—अँगूठे की जड़ और कलाई के बीच में हथेली पर आरम्भिक भाग में जो छोटी छोटी रेखाऐं हैं उनसे संतान के सम्बन्ध में पता चलता है। यह रेखायें जितनी हों उतनी संख्या में सन्तान होंगी। जो रेखाएं हथेली की ओर से आरम्भ होकर पृष्ठ भाग की ओर बढ़ रही हों वे पुत्रों की सूचक है। जो पृष्ठ भाग की ओर से आरम्भ होकर हथेली की तरफ चल रही हों वे कन्याओं की संख्या बताती हैं। बीच बीच में ही जो बहुत पतली और खंडित रेखायें होती हैं वे गर्भपात या बालकों की अल्पायु में ही मृत्यु की सूचना देती है, जितनी रेखाएं गहरी स्पष्ट और लम्बी हों उतनी ही संतानों का निश्चय करना चाहिये। इनमें से जितनी कटी फंसी नहीं वे संतानें सुख देती हैं, जितनी रेखाएं कटी, टूटी या फांकदार हों वे सन्तानें प्रायः जी को जलाने वाली, विरोधी और कष्टदायी होती है।

कुछ अन्य चिन्ह

कोण	त्रिभुज	गुणक	जाल
दाग	नक्षत्र	द्वीप	समकोण

हाथ में कई प्रकार के अन्य चिन्ह भी देखे जाते हैं। इनमें से आठ प्रमुख चिन्ह यह हैं (१) दाग. (२) नक्षत्र, (३) द्वीप, (४) समकोण, (५) कोण, (६) त्रिभुज (७) गुणक, (८) जाल। इन चिन्हों की तसवीरें चित्र में दी हुई हैं। उसके आधार पर पाठक इन चिन्हों की आकृति समझ सकते हैं।

इन चिन्हों में नक्षत्र द्वीप, समकोण, कोण और त्रिभुज यह पांच शुभ हैं। दाग, गुणक और जाल यह तीन अशुभ हैं। जो चिन्ह जिस रेखा के समीप हो या बीच में हो वह उसी रेखा के फल को भला या बुरा बनावेगा। अशुभ चिन्ह उसी रेखा के फल में बुराई पैदा करेंगे जिसके समीप होंगे, इसी प्रकार शुभ चिन्ह भी अपना फल दिखावेंगे।

यह उपरोक्त चिन्हों में से कोई चिन्ह किसी ग्रह के स्थान पर हो तो उस ग्रह के फल पर भी उस चिन्ह का प्रभाव पड़ेगा। बुरा चिन्ह उस ग्रह के फल में अपनी बुराई को भी जोड़ देगा, इसी प्रकार शुभ चिन्ह उस ग्रह के अशुभ फल में सुधार और शुभ फल में वृद्धि करेगा।

सप्त वर्षीय नियम

इस संसार की हर चीज गोल है और हर वस्तु अपनी धुरी पर घूमती है। फल स्वरूप प्रत्येक बात की पुनरावृत्ति हुआ करती है। सूर्य हर चौबीस घण्टे बाद नित्य उदय होता है और चौबीस घण्टे बाद ही नित्य अस्त होता है। ऋतुएँ एक साल बाद फिर वापिस आ जाती हैं। समस्त ग्रह नक्षत्र अपने नियत क्रम पर घूमते हुए अपनी परिक्रमा पूरी किया करते हैं। इसी विधान के अनुसार जीवन का एक चक्र सात वर्ष में पूरा हो जाता है। जो सुख, दुख, हानि, लाभ, जीवन के पहले वर्ष में हुए थे उसी से मिलते जुलते १, ७, १४, २१, २८' ३५, ४२, ४९, ५६, ६३, ७० आदि वर्षों में होते जांयगे। जो हानि, लाभ, सुख, दुख, जीवन के दूसरे वर्ष में हुए थे वैसे ही २, ८, १५, २२, २९, ३६, ४३, ५०, ५७, ६४, ७१, ७८ आदि वर्षों में होंगे। इसी प्रकार सात वां वर्ष वैसा ही आ जाता है जो पहला था। यदि किन्ही ६ वर्षों का वर्षफल ध्यान पूर्वक तैयार कर लिया जाय तो जीवन भर का साधारण वर्षफल बन जाता है। हां, विशेष कारण वश उसमें विशेष न्यूनाधिकता हो जाना दूसरी बात है।

हाथ में उपस्थित रेखाओं के शुभाशुभ फल में भी यह सप्त वर्षीय नियम काम करता है। उसकी रीति यह है कि जिस रेखा के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करनी हो उसकी सम्भावित पूरी लम्बाई नाप लेनी चाहिये। मान लीजिये कि हाथ की बनावट के अनुसार किसी की भाग्य रेखा यदि पूरी बनी होती तो संभवतः ४ इन्च होनेकी सम्भावना थी। अब इसे एक कागज पर नोट कर लीजिये और १०० वर्ष आयु से इसका अनुपात निर्धारित कर लीजिये। जैसे—

४ इञ्च = १०० वर्ष

अब देखिये कि हाल में भाग्य रेखा की लम्बाई कितनी है। यदि वह ३ इञ्च हो तो उसका हिसाब इस प्रकार लगाना चाहिये कि यदि ४ इञ्च भाग्य रेखा होती तो १०० वर्ष तक फल देती। किन्तु वह ३ इञ्च है तो ७५ वर्ष तक ही फल देगी। इसका अर्थ यह न समझना चाहिये कि ७५ वर्ष की आयु में मृत्यु होजायगी, वरन् यह है कि यदि जीवन कायम रहे तो ७५ वर्ष तक फल देगी, इसके बाद निष्फल हो जायगी। इसी प्रकार यदि कोई रेखा पूरी सम्भावना की अपेक्षा चौथाई ही हो तो इसका फल २५ वर्ष रहेगा इसके उपरांत वह रेखा निरर्थक हो जायगी।

जीवन के आदि, मध्य या अन्त में रेखा का फल रहेगा यह जानने के लिये यह देखना चाहिये कि रेखा किस भाग में स्पष्ट है, किस भाग में टूटी है, किस भाग में धुँधली है और किस भाग में बिलकुल नहीं है। रेखा को ४ भागों में बांट कर हर एक २५, २५ वर्ष वाले भाग का अनुमान कर सकते हैं। जैसे कोई रेखा आदि के एक चौथाई भाग में बिलकुल न हो और अन्त में भी न हो सिर्फ बीच ही बीच में हो तो इसका तात्पर्य यह है कि बालकपन और वृद्धावस्था के २५ वर्षों में वह रेखा फल न देगी वरन् २५ वर्ष की आयु से लेकर ७५ वर्ष तक के बीच के ५० वर्षों में ही उसका फल रहेगा। बीच में या आदि, मध्य में यदि कोई रेखा पतली, धुँधली, टूटी हुई हो तो उस समय में उसका फल भी उसी अनुपात से कम होता है। जिस स्थान पर कोई रेखा अधिक मोटी या दुहरी हो गई हो इस स्थान की लम्बाई नाप कर उपरोक्त प्रकार से हिसाब लगा कर यह जाना जा सकता है कि जीवन के किस वर्ष में कौन रेखा कितना या कैसा फल देगा। यदि उस रेखा की स्थिति शुभ है

तो रेखा के स्पष्ट भाग में जाकर बहुत अच्छा फल और अस्पष्ट भाग में कम अच्छा फल देगी। यदि उस रेखा की स्थिति अशुभ है तो मोटे स्पष्ट भाग में अधिक बुरा फल अस्पष्ट भाग में कम बुरा फल देगी। डोरे से रेखा की लम्बाई नाप कर उपरोक्त रीति से यह हिसाब लगाया जा सकता है कि किस रेखा का जीवन के किस वर्ष में कैसा फल होगा।

सप्त वर्षीय परिवर्तन नियम के अनुसार रेखाओं का विशेष फल जानने का तरीका यह है कि किसी रेखा के बारे में उपरोक्त रीति से पहले यह मालूम करना चाहिये कि वह जीवन के किस भाग में कितने वर्ष तक फल देगी। जैसे किसी रेखा की स्थिति देख कर यह मालूम हो गया कि यह रेखा २० वर्ष की आयु से लेकर ७० वर्ष की आयु तक ५१ वर्ष फल देगी। इस पचास वर्ष को सप्त वर्षीय परिक्रमा में बांट दीजिये। सात चक्र पूरे हुए और दो वर्ष बचे। इन चक्रों का हर एक आरंभिक वर्ष इस रेखा के फल से विशेष रूप से सम्मिलित होगा। जैसे स्थिति के अनुसार उस रेखा का फल धन प्राप्त होना है तो समझ लीजिये कि उपरोक्त रेखा के अनुसार २०, २६, ३३, ४०, ४७, ५४, ६१, ६८ वर्षको आयु में विशेष रूप से धन की प्राप्ति होगी। यदि उस रेखा का स्थिति के अनुसार फल धन नाश होता तो यही वर्ष विशेष रूप से धन नाश करने वाले होते।

इस प्रकार हर रेखा का सप्त वर्षीय परिभ्रमण के नियमानुसार शुभाशुभ फल की विशेषता जानी जा सकती है। रेखाएँ डोरे की सहायता से सही रूप में नाप कर ध्यान पूर्वक गणित किया जाय तो जन्म पत्र की योगिनी, दशा एवं विंशोत्तरी दशा के अनुसार हस्त रेखाओं के अनुसार जन्म पत्र भी बन सकता है। जन्म समय ठीक मालूम न होने से कभी कभी इष्ट गलत हो

जाने से जन्म पत्र के फलों में अन्तर भी पड़ सकता है, पर हस्तरेखाओं के अनुसार निर्धारित किया हुआ फलादेश अपेक्षाकृत अधिक ठीक निकल सकता है।

आकृतियों के फल

भारतीय सामुद्रिक शास्त्र में स्त्री का बांयों हाथ और पुरुष का सीधा हाथ देखने का विधान है। रेखाओं के मिलन से हाथ में कहीं कहीं कुछ आकृतियां सी बन जाती हैं। उन आकृतियों को भारतीय सामुद्रिक शास्त्री विशेष महत्व देते हैं और इनके अनुसार फल निश्चय करते हैं।

भारतीय हस्त रेखा विज्ञान के अनुसार जिस व्यक्ति के हाथ में मछली के समान रेखा हो तो उसके काम सिद्ध होते हैं, वह धाढ्य और बहुत सन्तान वाला होता है। जिसके हाथ में तराजू, मकान या वज्र जैसी आकृति हो उसका व्यापार खूब चलता है। जिसके हाथ में कमल पुष्प, धनुष, तलवार चक्र या अष्टकोण का चिन्ह हो वह योद्धा, धनवान होता है और स्वस्थ रहता है। त्रिशूल जैसा चिन्ह हो तो वह राज दरबारी, सात्विक प्रकृति का और शुभ कार्य करने वाला होता है। अंकुश या कुण्डल के चिन्ह हों तो राज मन्त्री, नेता एवं महापुरुष बनता है। पर्वत, कंकण, मनुष्य का सिर पड़ा जैसे चिन्ह हों तो पराक्रम यश, आदर एवं विजय का सेहरा उसके शिर पर बँधता है। सूर्य, चन्द्र, बेल, नेत्र, त्रिकोण, मन्दिर हाथी, घोड़ा की आकृति हाथ के किसी स्थान में हों तो उसें धनवान, सुखी और समृद्ध होने का चिन्ह समझना चाहिये। अँगूठे के बीच में जौ का चिन्ह हो तो वह ऐश्वर्य प्राप्ति का लक्षण है। तर्जनी (अँगूठे के पास की) और मध्यमा (बीच की) उँगली की जड़ में जो

का चिन्ह हो तो उस व्यक्ति को दाम्पत्ति सुख की प्राप्ति होती है और परिवारिक जीवन आनन्द मय रहता है।

जिसके हाथ में शंख, ध्वजा या नासिका जैसी रेखा हो तो वह असाधारण विद्वान होता है। माला, तीर, रथ, कुण्डल, छत्र जैसे निशान राजाओं के हाथ में होते हैं। हाथ में जितने यव (जौ) के चिन्ह हों तो वे विद्या की अधिकता प्रकट करते हैं। इसी प्रकार मछली की आकृति से यश का, हथियारों से वीरता कोठरी में धन का, त्रिकोणों से स्वास्थ्य का परिचय प्राप्त होता है। हाथ में जितने कमल हों वे धर्म बुद्धि सूचित करते हैं।

उंगलियों में आड़ी रेखाएँ "——' इस प्रकार की जितनी होंगी वे क्रोध एवं लोभ की प्रतीक हैं। सद्गुण और सत्कार्यों के अनुसार उँगलियों में "।" इस प्रकार की खड़ी रेखाएँ उत्पन्न होती हैं। एक दूसरे को काटती हुई "×" इस प्रकार की रेखाएँ मानसिक बेचैनी, चिंता, शोक एवं वेदना का होना प्रकट करती हैं। दुस्साहसी लोगों की उँगलियों में बहुत छोटी छोटी आड़ी, टेढ़ी रेखाएँ देखी जाती हैं।

यदि अँगूठे की जड़ में '४' चार का अक्षर सा बना हो तो वह निष्ठुरता, क्रूरता और लड़ाई झगड़े की प्रवृत्ति का सूचक है। यदि कलाई में कटा हुआ सा त्रिकोण हो तो उसका अधिकांश जीवन परदेश में व्यतीत होता है। अनामिका उँगली के तीसरे पोरवे में पास पास दो रेखाएँ हों तो ऐसा व्यक्ति तीव्र बुद्धि वाला, कुशल और पराक्रमी होता है। अनिष्टका (सब से छोटी) उँगली की जड़ में जितनी छोटी छोटी अस्तव्यस्त रेखायें हों उसी अनुपात से स्वास्थ्य की रेखा वह समझनी चाहिये। मध्यमा (बीच की) उँगली की जड़ में जिसके दो रेखाएँ होती हैं वह परिश्रमी और उत्साही होता है। कलाई पर साँप का

चिन्ह जिनके होता है वे चोरी, छल तथा क्लिष्ट कर्मों में रुचि रखने वाले देखे जाते हैं।

कनिष्ठका के तीसरे पोरुवे में गुणित ' × ' का निशान हो तो उसे मन्द बुद्धि और संशयी होने का चिन्ह समझना चाहिये। भोग विलास में अधिक रुचि रखने वालों की अनामिका उँगली की जड़ में टेढ़े टेढ़े निशान पड़ जाते हैं। अँगूठे के मध्य भाग में सर्प जैसी टेढ़ी रेखा वाले व्यभिचारी होते हैं। उँगलियों के दूसरे और तीसरे पोरुवे की मध्य रेखा को काटती हुई यदि खड़ी रेखा दिखाई पड़े तो उसे बुद्धिमत्ता, विवेक शीलता, उदारता एवं सहृदयता का चिन्ह समझना चाहिये। पहले और दूसरे पोरुवे की मध्य रेखा को काटती हुई खड़ी रेखा चाहे वह किसी भी उँगली में क्यों न हो तो धन, वैभव, यश और भोग की प्रतीक है।

अँगूठे से स्वास्थ्य, तर्जनी से स्वभाव, मध्यमा से ज्ञान, अनामिका से वैभव और कनिष्ठका से पूर्व संचित शुभ अशुभ संस्कारों का पता चलता है। जो उँगली कृश, पुष्ट, सुन्दर, कुरूप, आदि जैसी आकृति की हो तो उसी के अनुसार उपरोक्त बातों की सूक्ष्म दृष्टि द्वारा जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

सामुद्रिक विद्या के अभ्यासियों को चाहिये कि हाथ का ढांचा, उंगली, अँगूठा, नाखून, हथेली की बनावट, ग्रहों का स्थान, हस्त रेखाएं, तिल, शंख, चक्र, मणिबन्ध तथा चिन्हों पर भली भाँति विचार करके फल की विवेचना करें। इस प्रकार गम्भीरता और सूक्ष्म दृष्टि के साथ किया हुआ विचार प्रायः असत्य नहीं होता, ऐसा हमारा अनुभव है।

॥ इति ॥

मनुष्य को देवता बनाने वाली पुस्तकें:—

यह बाजारू किताबें नहीं हैं, इनकी एक एक पंक्ति के पीछे गहरा अनुभव और अनुसंधान है:—

१—मैं क्या हूँ ?	।=]
२—सूर्य चिकित्सा विज्ञान	।=]
३—प्राण चिकित्सा विज्ञान	।=]
४—परकाया प्रवेश	।=]
५—स्वस्थ और सुन्दर बनने की अद्भुत विद्या	।=]
६—मानवीय विद्युत के चमत्कार	।=]
७—स्वरयोग से दिव्य ज्ञान	।=]
८—भोग में योग	।=]
९—बुद्धि बढ़ाने के उपाय	।=]
१०—धनवान बनने के गुप्त रहस्य	।=]
११—पुत्र या पुत्री उत्पन्न करने की विधि	।=]
१२—वशीकरण की सच्ची सिद्धि	।=]
१३—मरने के बाद हमारा क्या होता है	।=]
१४—जीव जन्तुओं की बोली समझना	।=]
१५—ईश्वर कौन है ? कहां है ? कैसा है ?	।=]
१६—क्या धर्म ? क्या अधर्म ?	।=]
१७—गहना कर्मणोगति	।=]
१८—जीवन की गूढ़ गुत्थियों पर तात्त्विक प्रकाश	।=]
१९—पंचाध्यायी धर्म नीति शिक्षा	।=]
२०—शक्ति संचय के पथ पर	।=]
२१—आत्म गौरव की साधना	।=]
२२—प्रतिष्ठा का उच्च सोपान	।=]
२३—मित्र भाव बढ़ाने की कला	।=]
२४—आन्तरिक उल्लास का विकास	।=]
२५—आगे बढ़ने की तैयारी	।=]

२६—आध्यात्म धर्म का अवलम्बन ।=]
२७—ब्रह्म विद्या रहस्योद्‌घाटन ।=]
२८—ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति योग ।=]
२९—यम और नियम ।=]
३०—आसन और प्राणायाम ।=]
३१—प्रत्याहार धारणा ध्यान और समाधि ।=]
३२—तुलसी के अमृतोपम गुण ।=]
३३—आकृति देख कर मनुष्य की पहिचान ।=]
३४—मैस्मरेजम की अनुभव पूर्ण शिक्षा ।=]
३५—ईश्वर और स्वर्ग प्राप्ति का सच्चा मार्ग ।=]
३६—हस्तरेखा विज्ञान ।=]
३७—विवेक सतसई ।=]
३८—संजीवनी विद्या ।=]
३९—गायत्री की चमत्कारी साधना ।=]
४०—महान जागरण ।=]
४१—तुम महान् हो ।=]
४२—गृहस्थ योग ।=]
४३—अमृत पारस और कल्पवृक्ष की प्राप्ति ।=]
४४—घरेलू चिकित्सा ।=]
४५—बिना औषधि के कायाकल्प ।=]
४६—पंच तत्वों द्वारा सम्पूर्ण रोगों का निवारण ।=]
४७—हमें स्वप्न क्यों दीखते हैं ? ।=]
४८—विचार करने की कला ।=]

कमीशन देना क़तई बन्द है, हां, आठ या इससे अधिक पुस्तकें लेने पर डाक खर्च हम अपना लगा देते हैं।

पुस्तक मिलने का पता:—

मैनेजर—'अखंड ज्योति' कार्यालय, मथुरा।

मुद्रक—श्यामलाल भार्गव, श्याम प्रेस, मथुरा।